हंगामेबाज़
बीस महिलाएं जो
बदलाव ला सकीं
लेखन व चित्रः चेरिल हार्नेस
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

यह किताब उन बीस स्त्रियों के बारे में है जिन्होंने अपनी दुनिया को बदलने की हिम्मत की। अपने देश की दुर्दशा व व्यापक अन्याय ने उन्हें उकसाया कि वे लोगों को झकझोर कर जगाएं, और वह दिखाएं जो उन्हें नज़र ही नहीं आ रहा था। वे पुनर्निमाण, पुनर्शिक्षित व सुधार करना चाहती थीं। प्रत्येक ने ऐसे देश के अपने सपने को बुलंद आवाज़ में बखाना जिसमें शक्तिहीनों को भी "जीवन, स्वतंत्रता और खुशी को तलाश पाने का" बराबर का हक़ हो।

विरोध के उनके तौर-तरीकों ने उन्हें मुसीबतों में फंसाया, उन्हें जेल भी हई। लोग उन्हें अक्सर, ख़तरनाक और पागल तक कहा करते थे। पर वे अपनी मुहिम पर डटी रहीं। और आज अमरीकी जिन आज़ादियों का आनन्द उठाते हैं, उसमें हरेक ने अपना योगदान दिया।

एन ली से आरंभ कर, जो शेकर समुदाय की संस्थापिका थीं, और जिन्होंने धर्म चुनने की व्यक्ति की आज़ादी के लिए संघर्ष किया था, "ग्रैनी डी" हैडक तक, जो चुनाव अभियान में सुधार लाने के आंदोलन की 92 वषीय नायिका थीं, ये हंगामेबाज़ स्त्रियाँ अमरीकी इतिहास के 200 वर्षों की अवधि में आईं, जिस दौरान अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक आन्दोलन हुए - शराबबन्दी आन्दोलन, महिला मताधिकार आन्दोलन, मज़दूर आन्दोलन, व नागरिक अधिकार आन्दोलन। इन विलक्षण, तेजस्वी स्त्रियों के आकर्षक शब्द-चित्र पुस्तक के पाठकों को प्रेरित करेंगे कि वे भी अपने विश्वासों-मान्यताओं की रक्षा के लिए उठ खड़े हों।

हंगामेबाज़

लेखन व चित्रः चेरिल हार्नेस

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरी सखियों व अतीत में गुम माता पंक्ति के लिएः एलीन, यूला, एमा, ...

- सी.एच.

परिचय

एन ली: अमरीकी शेकर्स की माँ

फ्रांसिस राइटः जुनूनी देशभक्त

एमा हार्ट विलर्डः समान अवसरों की पैरोकार

सजर्नर ट्रूथः सत्य उपदेशिका और आज़ादी की शिक्षिका

मेरी एन शैड केरीः गुलामी उन्मूलन की सक्रियकर्मी

एलिज़ाबैथ कैडी स्टैन्टनः पेटिकोटधारी क्रान्तिकारी

सूज़न बी. एन्थनीः महिला मताधिकार की हिमायती

कालक्रमः महिला अन्दोलन

डॉ. मेरी एडवर्डस्ः गृहयुद्ध की नायिका और सुधारक

फ्रांसिस ई विलर्डः टेम्परेन्स (संयम) सक्रियकर्मी

मेरी ई. लीज़ः कैनसास की जनवादी "जोन ऑफ आर्क"

आइडा बैल वैल्स्-बारनैटः लिंचिंग विरोधी अभियान की अगुवाई करने वाली

जेन एडम्सः सामाजिक कार्यकर्ता जिसका कारोबार मानवीयता था

मेरी हैरिस जोन्सः मज़दूर आन्दोलन की हिमायती

मार्गरेट सैन्जरः गर्भ नियंत्रण सक्रियकर्मी

एलिस पॉल: महिला मताधिकार के लिए आख़िरी धक्का

18 अगस्त 1920

एलिनोर रूज़वैल्टः विश्व की प्रथम महिला

फैनी लू हैमरः नागरिक अधिकारों की पैरोकार

कालक्रम: नागरिक अधिकार आन्दोलन

बैटी फ्रीडनः नारीवादी

डोलोरस हुएर्ताः प्रवासी खेत-मज़दूरों की हिमायती

डॉरिस हैडकः चुनाव अभियान में सुधार की पैरोकार

नागरिक पहल के सुझाव

"हमारा भविष्य उस पर ही पूरी तरह निर्भर करता है
जो हममें से हरेक हर दिन करता है।"

- गलोरिया स्टाइनैम

यह किताब उन बीस बड़े दिल वाली स्त्रियों के बारे में है, जिन्होंने दुनिया को बदलने की जुर्रत की। दुर्दशा और अन्याय ने उन्हें प्रेरित किया। वे लोगों को झकझोरना चाहती थीं - उन्हें जगाना चाहती थीं, ताकि वे वह सब देखें जो उन्हें नज़र ही नहीं आ रहा था। वे पुनर्निमाण, पुनर्शिक्षित, पुनर्प्राप्ति व सुधार करना चाहती थीं। इनमें से हरेक ने एक ऐसे देश के अपने सपने को बुलन्द आवाज़ में बखाना जिसमें शक्तिहीनों को भी वे सारे अविभाज्य अधिकार मिलें जो अमरीका के संविधान में उल्लिखित हैंः "जीवन, स्वतंत्रता और खुशी की तलाश।"

"खुशी की तलाश" के उनके तौर-तरीकों ने उन्हें मुसीबतों में फंसाया। लोगों ने कहा कि उनका आचरण भद्र महिलाओं सा नहीं है, वे ख़तरनाक और सिरफिरी हैं - और लोग चाहते थे कि यह अंतिम शब्द उन्हें डंक-सा चुभे। उनका मतलब दरअसल यह था कि वे स्त्रियोचित शराफ़त की सारी हदें पार कर चुकी हैं। पर अगर आप 'रैडिकल' (अतिवादी) शब्द का अर्थ तलाशेंगे, तो आप पाएंगे कि वह उस शब्द से निकला है जिसका अर्थ है 'जड़'। मतलब "मुद्दे की जड़"। यानी बुनियादी, आधारभूत बातें। उदाहरण के लिए आप इस शब्द का उपयोग इस तरह कर सकते हैं: हमारा लोकतंत्र, आज़ादी, न्याय और इस विचार के आधारभूत सिद्धान्तों पर टिका है कि सत्ता "वी द पीपल" (हम देश की जनता) में निवास करती है।

और इस पर इनमें से हरेक महिला कहती "आमीन!"

एन ली
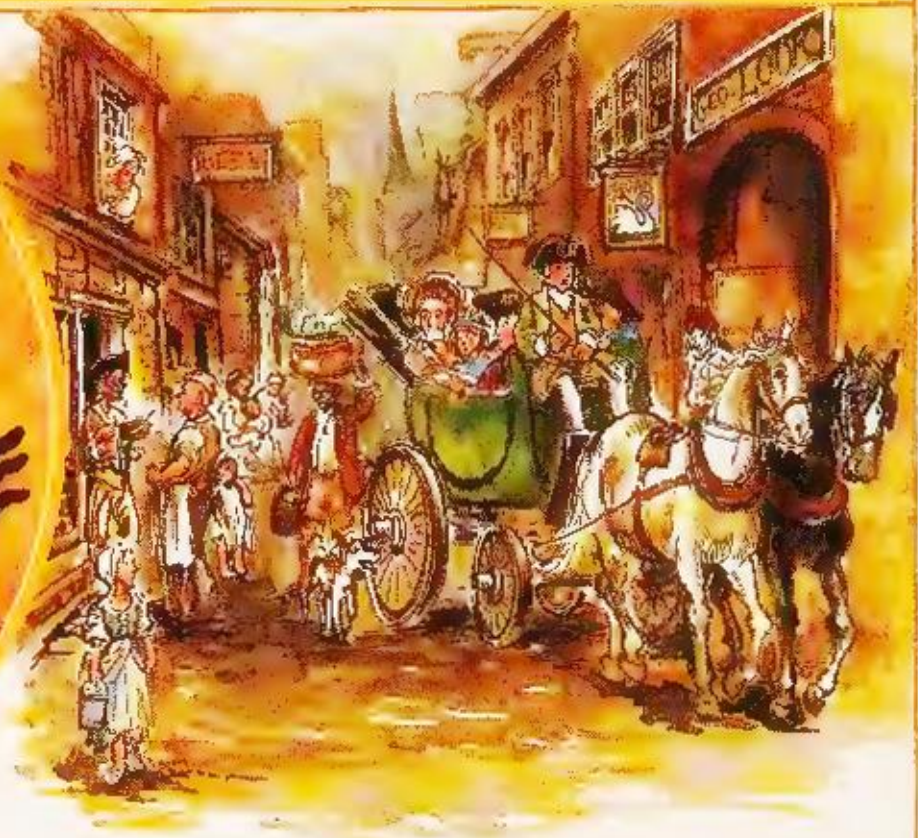
20 फरवरी 1736
मैनचैस्टर, इंग्लैण्ड
8 सितम्बर 1784
वॉटरविले, न्यू यॉर्क

"मैं अपने हाथों को कमा में लगाती हूँ और दिल को ईश्वर में।"

आप अठाहरवीं शताब्दी के तैलचित्रों में इंग्लैण्ड के भाग्यशाली लोगों को देख सकते हैंः उनमें स्त्रियाँ अपने गुलाबी बच्चों और लम्बे मोज़े पहने पतियों के साथ नज़र आती हैं। लगता है वे लोग उस गंदे, बदबूदार शहर से बहुत दूर रहते थे जहाँ ज़र्द बच्चे कपड़ा मिलों में लम्बे घंटों तक काम करते थे। उनके श्रम ने मिल मालिकों को इतना धनवान बनाया कि वे आलीशान बड़े घरों में रहें और अपने तैलचित्र बनवा सकें।

इन मिल मज़दूरों में एक थी आठ वर्षीय एन ली। उसके काम की बारह घंटों लम्बी पारी उसे एक बेहतर दुनिया का सपना देखने को उकसाती थी। सालों बाद, शादी करने, चार बच्चे जनने और उनके एक-एक कर मर जाने के बाद, एन ने अपनी धार्मिक विश्वासों में गहरा गोता लगाया। नीली आँखों वाली एन, इस दुखद दुनिया में सत्य और पवित्रता को तलाशने में जुट गईं। उन्होंने जो पाया वह दुनिया को उलट देने वाला था।

एन को "शेकिंग क्वेकर्स" में तसल्ली मिली, जो शान्तिप्रिय पुरुषों व महिलाओं का समूह था जो अपनी इबादत में इस कदर डूब जाते कि वे सचमें हिलते - वे नाचते, गाते और चीखते। उनकी नज़र में ईश्वर नर और मादा दोनों था और कोई भी - एक स्त्री भी उपदेशक बन सकती थी।
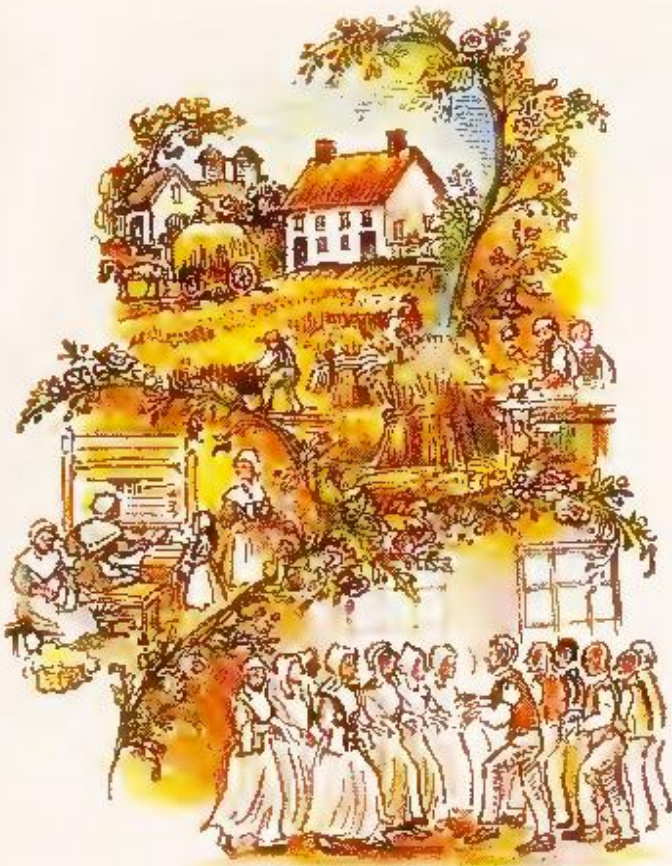
1770 में एन ने अपने ग़रीब, जुनून से भरे अनुयायियों को अपने विचारों के बारे में बताया, जिसमें इन्सानों का गौरवशाली समूह धरती पर स्वर्ग को उतारेगा, जो एन का सपना था। जहाँ वे साथ-साथ रहें, काम करें और सबके साथ बराबरी से बांटें। इस स्वर्ग में वे ब्रह्मचारियों जैसी पवित्रता में जीने वाले थे, ऐसा कुछ भी नहीं करने वाले थे जिससे उनके बच्चे हों, और ईश्वर के प्रति उनके प्रेम से उन्हें भटकाएं।

एन के विचार कई लोगों को अतिवादी लगे। उन्होंने एन को भगाया, मारा-पीटा, यहाँ तक कि कैद भी किया। आख़िरकार एन अपने आठ शेकर अनुयायियों के साथ इंग्लैण्ड छोड़ उस देश के लिए निकलीं जहाँ वे शान्ति से अपनी तरह से अराधना कर सकें: अमरीका। यहाँ उन्होंने 1776 में एल्बनी, न्यू यॉर्क में अपनी पहली बस्ती - निस्कयूना - बसाई। आस्थावानों के छोटे से समूह से हुई यह शुरुआत कठिन थी। युद्ध का साया देश पर था। पर क्योंकि शेकर्स शान्तिवादी थे, लोगों को डर था कि वे दरअसल ब्रिटेन के जासूस हैं! फिर भी लोग इस छोटे कद की स्त्री के प्रति आकर्षित होते रहे जो समूचे न्यू इंग्लैण्ड में पैदल घूम खुद को थकाती और लोगों को प्रेरित व क्रोधित करती थीं।

"माता एन" ने सामन्जस्यपूर्ण समाज का जो बीज बोया, वह फूला-फलाः इस तथ्य के बावजूद कि शेकर्स के बच्चे नहीं थे - गृह युद्ध के पहले 6,000 "भाई-बहन" मेन से कैन्टकी तक के उन्नीस गाँवों में बस चुके थे। तब से उनकी संख्या घटी है, और आज एक बहुत छोटा समूह "माता की बुद्धिमत्ता" का पालन करते हैंः इस ज्ञान को स्वीकारते हैं कि सरलता ईश्वर की भेंट है, और ठीक से किया गया काम ही ईश्वर है।
एक सामान्य कुर्सी जिसे सावधानी से बनाया गया हो वह प्रार्थना मानी जा सकती है। शेकर्स ने अपने काम को तेज़ी से करने के लिए कई औज़ारों का आविष्कार कियाः सपाट झाड़ू, कपड़े टांगने की पिनें, कपड़े धोने का यंत्र, गोलाकार आरा, आलू का छिलका उतारने वाला पीलर, और भी अन्य कई यंत्र। ये सभी उस साहसी, निरक्षर महिला एन ली की जीवन्त आस्था से प्रेरित थीं, जो धरती पर स्वर्ग रचना चाहती थी। एन ली ने 48 वर्ष की आयु में 1784 की पतझड़ में इस धरती से विदा ली। उनका कोई चित्र नहीं आँका गया था।

फ्रांसिस राइट

8 सितम्बर 1795
डंडी, स्कॉटलैण्ड
13 दिसम्बर 1852
सिनसिनाटी, ओहायो

"मैंने मानव सुधार से विवाह किया है और उसी पर अपनी तकदीर, अपनी प्रतिष्ठा और अपना जीवन दाँव पर लगा दिया है।"

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में, जब अमरीकी 4 जुलाई का भव्य जश्न मनाने इकट्ठा हुए, उन्होंने यह जश्न गर्व, खाने, पीने, और शोरगुल के साथ मनाया। तब एक बेहद लम्बे कद के सम्मानित व्यक्ति ने स्वतंत्रता दिवस का उद्बोधन दिया। 4 जुलाई 1828 के दिन न्यू हार्मनी के नागरिकों ने स्कॉटलैण्ड की मूल निवासी को अमरीका के बारे में एक उम्दा भाषण देते सुना। पर यह वक्ता कोई पुरुष नहीं था। फ्रांसिस राइट ने श्रोताओं से कहा कि "आज़ादी का मतलब केवल चुनाव के समय वोट डालना नहीं है, इसका मतलब होता है अपनी मानसिक काबलियत का आज़ाद और निडर उपयोग करना ...

आज़ाद लोग जो आज़ादी से सोचते हों और अपने श्रेष्ठतम जीवन जीते हों: ये विचार फ्रैनी राइट के लिए तब से जुड़वाँ थे जब वे महज एक बालिका थीं। तेइस साल की होने के कुछ पहले फैनी राइट स्कॉटलैण्ड से उस देश के लिए निकलीं जो उनके रूमानी आदर्शों, आज़ादी और सहिष्णुता का प्रतीक था। गुलामी की कड़वी हकीकत के सिवा फैनी संयुक्त राज्य अमरीका से इतना प्रेम करती थीं कि उन्होंने 1821 में वहाँ के अपने अनुभव पर एक किताब लिखी *व्यूज़ ऑफ सोसायटी एण्ड मैनर्स इन अमेरिका* ।

मर्कीस द लफायेत, जो क्रांति युद्ध के फ्रांसीसी हीरो थे, फ्रांसिस की किताब के इतने बड़े प्रशंसक थे कि वे फैनी को अपने पुराने मित्रों थॉमस जैफरसन व जेम्स मैडिसन से मिलवाने ले गए। वे फैनी को क्रान्ति के आदर्शों का हिमायती मानते थे। इन बुज़ुर्गवारों ने गुलामी के कारण देश में भावी परेशानियों और हिंसा की पूर्व-घोषणा की थी। फैनी का संकल्प था कि वे इस 'बदनुमा धब्बे' को अमरीका के माथे से मिटाने के शान्तिपूर्ण तरीके तलाश लेंगी।

1825 में उन्होंने टैनेसी में नशोबा नाम से एक समुदाय आरंभ किया, जहाँ गुलाम आज़ादी पाने के पहले वे तमाम कौशल सीख सकें जिनकी ज़रूरत उन्हें निकट भविष्य में पड़ने वाली थी। पर बीमारी और अनुभवहीनता ने इस प्रयोग को 1827 तक असफल कर दिया। तब फैनी ने अमरीका भर में यात्राएं कीं और बड़ी भीड़ों को संबोधित करने लगीं। लोग एक स्त्री को सार्वजनिक मंच से बोलते सुनने के अजूबे को देखने आते थे। वे सफेद वस्त्रों में इस स्कॉट महिला को गुलामी और दिमाग की जंज़ीरों में जकड़ने वाल गिरजों के विरुद्ध चौंकाने वाले विचार रखते सुनते। फैनी सरे आम कहतीं कि स्त्रियों को कानूनों की बेड़ियों में जकड़ा गया है - क्रूर विवाहों में, मत देने के अधिकार के बिना, समान शिक्षा पाने का मौका दिए बिना, और बच्चे होने के बारे में चयन के बिना। उनके विचार सुन लोग दंग रह जाते। उनके भाषण कक्षों को खाली करने के लिए धुंआ बम दागते।

अधीर फैनी ने अखबारों का सम्पादन किया, शादी की, फ्रांस और अमरीका के बीच अनेक यात्राएं कीं। वे निःशुल्क शिक्षा और कामगारों के अधिकारों पर बोलती रहीं। जैसे-जैसे वे और उनका दत्तक देश बड़े होते गए, उनको सुनने कम से कमतर लोग आते। पर 4 जुलाई को गठित लोकतंत्र वह मशाल थी जो कभी बुझी नहीं। उनके लिए संयुक्त राज्य का लोकतंत्र देशभक्तों का देश था जिसमें "दिमागों को विस्तार देने और दिलों को बेहतर बनाने की क्षमता थी।" उनकी नज़र में अमरीका दुनिया की श्रेष्ठतम उम्मीद थी।
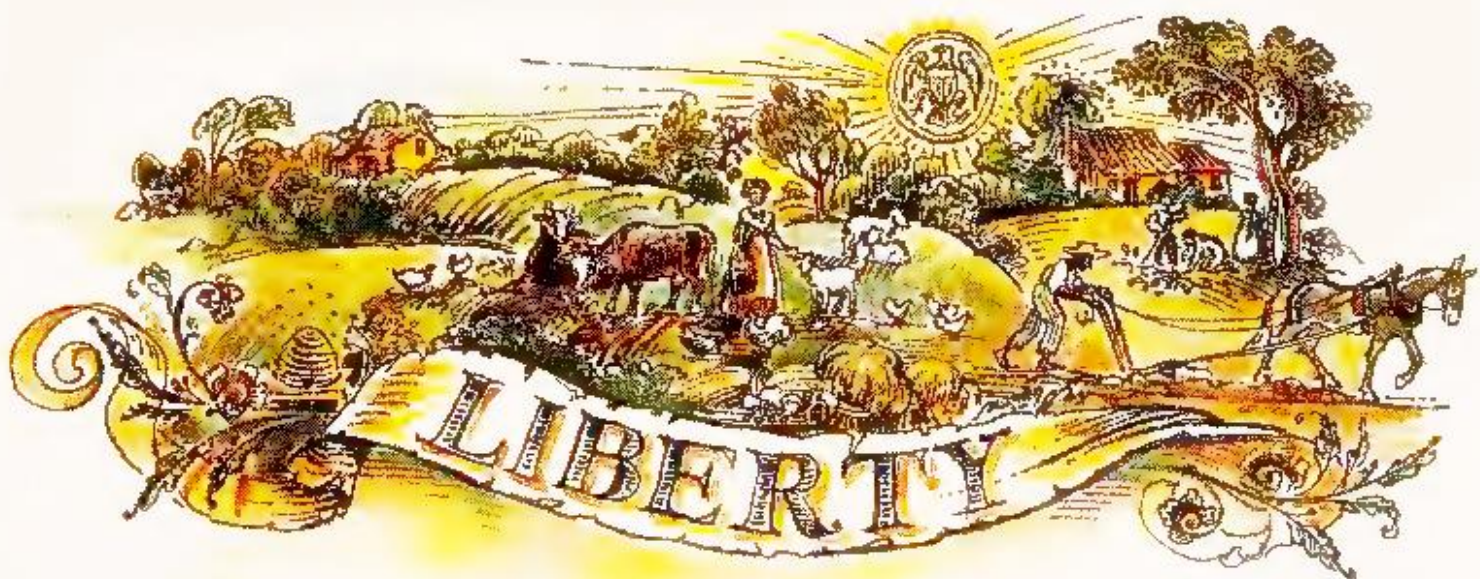
एमा हार्ट विलर्ड

23 फरवरी 1787
बर्लिन, कैनेटिकट
15 अप्रेल 1870
ट्राय न्यू यॉर्क

"हमेशा से कहा जाता रहा है कि विशुद्ध शिक्षा एक पुरुष को चमकाती है, तो वह स्त्रियों को अतिरिक्त आकर्षण क्यों नहीं दे सकती।"

एमा हार्ट के पिता प्रगतिशील विचारों के थे। वे अपने सभी सतरह बच्चों को, मय अपनी बेटियों के, किताबी शिक्षा देना चाहते थे। एमा ने शिक्षा पर अपने पिता के इस विश्वास को विरासत में पाया। जब वे सतरह वर्ष की हुईं वे अपने कस्बे के स्कूल में पढ़ाने लगीं। बाद में उन्होंने वर्मोन्ट की महिला अकादमी में पढ़ाया। तब मिडलबरी के डॉ. जॉन विलर्ड से विवाह किया। मिडलबरी में एक कॉलेज था, एमा को ज्यामिति, बीजगणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, लैटिन और ग्रीक की पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करने का मौका मिला, जो पुरुष छात्रों को उपलब्ध थीं, पर युवा महिलाओं को नहीं।

एमा के ज़माने में अधिकतर लोग मानते थे कि महिलाओं को बस पढ़ना-लिखना, घर की साफ़-सफाई करना, बच्चों की देखभाल करना और मेज़ पर पका खाना रखना भर आना चाहिए। इससे ज़्यादा जानने की उन्हें ज़रूरत नहीं थी। यही "औरतों का क्षेत्र" था। यानी उनका दर्जा बच्चों से कुछ ऊपर था पर पुरुषों से नीचा। अगर कोई महिला सम्पन्न परिवार से होती तो वह कशीदाकारी और फ्रांसीसी बोलना, थोड़ा बहुत संगीत और घरेलू सेवकों का प्रबंधन करना सीख सकती थी।

अनेक ऐसे भी नकचढ़े थे जो सोचते थे कि "कठिन" विषय लड़कियों के दिमाग को नुकसान पहुँचा सकते थे, और फिर यह ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध भी था। वर्ष था 1814।

जब मिडलबरी फीमेल सेमिनरी की सत्तर छात्राओं के दिमाग अपने पाठ्यक्रम से जूझ रहे थे, एमा हार्ट विलर्ड ने महिला शिक्षा को बेहतर बनाने की योजना बनाई। एमा के अनुसार उनकी योजना में जो विषय शामिल किए गए थे वे स्त्रियों के "नैतिक, बौद्धिक, व शारीरिक प्रकृति को उत्कृष्ट बनाएंगे ...।" 1818 में उन्होंने अपनी योजना न्यू यॉर्क की विधान सभा और गवर्नर डुविट क्लिंटन को भेजी। 'आन्तरिक सुधारों' के बारे में क्लिंटन के प्रगतिशील विचार थे, जैसे ईरी नहर जिसे राज्य के आर-पार पुरुषों द्वारा खोदा जा रहा था। नागरिकों को चतुर बनाने से बड़ा 'आन्तरिक सुधार' भला क्या हो सकता था। राज्यपाल ने मिसेज़ विलर्ड को अनुमति तो दी, पर पैसे नहीं, कि वे वॉटरफोर्ड में महिलाओं के लिए एक स्कूल खोलें। लोगों ने नाखुशी से सिर हिलाए। शिक्षित औरतें? यह तो अस्वाभाविक था! "भविष्य में वे गायों को शिक्षित करेंगे," एक किसान को कहते सुना गया। इसके बावजुद 1821 में न्यू यॉर्क के ट्रॉय कस्बे में एक भवन के लिए 4,000 डॉलर की राशि को मंजूरी दी गई। और यों ट्रॉय फीमेल सेमिनरी को जन्म हुआ, जो महिलाओं को उच्च शिक्षा देने वाली पहली शिक्षण संस्था थी।

नब्बे छात्राएं, उन सैंकड़ों में पहली थीं, जिन्होंने यहाँ शिक्षा पाई, और जो स्कूली शिक्षिकाएं बन इस ज्ञान को आगे पहुँचाने वाली थीं। (शिक्षिका का पेशा अब महिलाओं के लिए न केवल संभव बल्की सम्मानजनक बनने लगा था), या प्रगतिशील विचारों वाली प्रभावशाली नागरिक बनने बाली थीं। जल्द ही बॉस्टन व न्यू यॉर्क शहर तथा ओबरलिन, ओहायो में सार्वजनिक हाई स्कूल खुलने वाले थे, और चतुर, साहसी स्त्रियों को कॉलेज जाने का मौका मिलने वाला था।

एमा हार्ट विलर्ड ने कविताएं लिखीं, इतिहास और भूगोल की पाठ्यपुस्तकें भी। उन्होंने हज़ारों मीलों के सफ़र किए और हज़ारों लोगों से लड़कियों की शिक्षा पर, उनके मस्तिष्कों की अनन्त संभावनाओं पर बात की, बशर्ते उनके लिए दरवाज़े खोल दिए जाएं।

सजर्नर ट्रूथ

लगभग 1797
अल्स्टर काउंटी, न्यू यॉर्क
26 नवम्बर 1883
बैटल क्रीक, मिशिगन

"मैं उतना ही काम कर सकती थी, जितना कोई पुरुष, और उतना ही खा भी सकती थी - तब, जब खाने का मिलता - और उतने ही कोड़े भी झेल पाती थी। मैं क्या औरत नहीं हूँ?"

बैट्सी और जेम्स ने अपनी नई बिटिया को एक रानी का नाम दिया - इज़ाबैला। 'बैल' का कुलनाम था बाउमफ्री, जो उनके मालिकों में से एक का नाम था। जिस समय तक उनके गृह राज्य न्यू यॉर्क के राजनीतिज्ञों ने 1827 में गुलामी को गैर-कानूनी घोषित किया, बैल एक पत्नी, माँ, दूध वाली, खेतिहर मज़दूर, बावर्ची, धोबन और वह सब करने वाली रह चुकी थीं, जिसे करने की ज़रूरत हो। वे एक के बाद एक कई मालिकों की मिल्कियत रह चुकी थी, और उनसे पिट चुकी थीं। नए कानून के बाद भी कोई गारंटी नहीं थी कि उनका मालिक अपनी कीमती 'संपत्ति' को आज़ाद करेगा। सो बैल को "आत्म-मुक्ति" करनी पड़ी। वह भाग निकली।

बैल छह फुट लम्बी फौलाद सी मज़बूत थीं, उनकी आवाज़ दमदार थी। वे अन्दर से भी मज़बूत थी - बदौलत अपनी प्रार्थनाओं व ध्यान के। वे न्यू यॉर्क शहर में घरेलू सेविका के रूप में काम कर रही थीं, जब उन्हें सूझा कि उन्हें देश भर में यात्राएं (सजर्न) करनी है और सत्य बोलना है। सो 1843 की जून में, जेब में पच्चीस सेंट, और एक नया नाम – सजर्नर ट्रूथ - ले, वे पैदल निकल पड़ीं। वे एक उपदेशिका बनने निकली थीं।

लोगों ने उन्हें गालियाँ दीं, पर वे अडिग रहीं। लोगों ने उन्हें मुक्के जमाए, लातें मारीं, पर वे जुटी रहीं। "बच्चों," वे कहतीं। "मैं खुदा से बात करती हूँ और वह मुझसे।" जो कोई उनकी बात सुनता उनसे वे उन लोगों के अधिकारों की बात कहतीं जो अमरीकी सामाजिक सीढ़ी के सबसे निचले पायदानों में पैदा हुए थेः लड़कियाँ, काले, ग़रीब। बुज़ुर्ग सजर्नर इन तीनों के बारे में बहुत कुछ जानती-समझती थीं।

"बच्चों," वे कहतीं, "जहाँ इतना शोर-शराबा हो, वहाँ कुछ तो गड़बड़ होगा। मुझे लगता है कि दक्षिण के नीग्रो लोग और उत्तर की महिलाएं, सभी अधिकारों की बात कर रहे हैं। ज़ाहिर है कि गोरे पुरुष जल्द ही दुविधा में फंसेंगे।" और जब वे अपनी बात यह कह खत्म करतीं, "बूढ़ी सजर्नर को और कुछ नहीं कहना," काले और गोरे, दोनों ही आँखों में आँसू लिए तालियाँ बजाते। वे उनकी जीवनी *द नैरेटिव ऑफ सजर्नर ट्रूथ* की प्रतियाँ खरीदते, जिसे निरक्षर सजर्नर ने 1850 में बोल कर लिखवाया था। लोग उनके चित्र वाले पोस्टकार्ड खरीदते। वे उनके मिशन के लिए पैसे देते, जो महिलाओं और कालों के साथ होने वाले बरताव के बारे में राष्ट्र की सोच को बदलने का था।

सजर्नर ट्रूथ, फ्रैडरिक डगलस के साथ मंच पर बैठीं। उन्होंने काले यूनियन सैनिकों की रसद लिए पैसे एकत्रित किए, और जब वे युद्ध में बीमार या घायल हुए उनकी तीमारदारी की। आज़ाद किए गए गुलामों के बेहतर जीवन के मसले पर वे व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति लिंकन से मिलीं। लगभग बहत्तर वर्षीय, आज़ादी की सवारी करने वाली सजर्नर ने 1865 की पतझड़ में वॉशिंगटन डी.सी. की स्ट्रीटकारों में कालों और गोरों के पृथक्करण को खत्म करवाया।

वे सफ़र करती रहीं, वे महिलाओं के अधिकारों और आज़ाद किए गए गुलामों के लिए पश्चिम में अवसरों पर बोलती रहीं। तब वे 1875 में अपने परिवार के साथ बैटल क्रीक, मिशिगन में रहने लगीं। वहीं सजर्नर ने अंततः विश्राम किया।

गुलामी उन्मूलन आन्दोलन

कालक्रम

1600 के आरंभिक वर्ष - पहले अफ्रीकियों को उत्तरी अमरीका के उपनिवेशों मे काम करने लाया गया।

1750 - तकरीबन 200,000 गुलाम और 40,000 आज़ाद काले अमरीका में रहने लगे थे।

5 मार्च 1770 - एक काले अमरीकी, क्रिस्पस एटकस् को बॉस्टन हत्या काण्ड में मारा गया। यह उपनिवेश निवासियों और ब्रितानी सैनिकों के बीच मुठभेड़ के दौरान हुआ।

1775-1783 - मैसाच्युसैटस् के पीटर सलेम जैसे लगभग 5,000 काले अमरीकियों ने अज़ादी की लड़ाई में उपनिवेशवादियों का साथ दिया।

21 जून 1788 - अमरीकी संविधान की पुष्टि हुई। इसमें आज़ाद लोगों के घरों में गुलाम रखने की अनुमति दी गई। गुलामों को नागरिक नहीं माना गया।

1817 - द अमेरिकन कॉलोनाइज़ेशन सोसायटी की स्थापना इस विचार पर की गई कि आज़ाद काले स्वेच्छा से अफ्रीका वापस लौट जाएंगे।

1827 - काले स्वामित्व व प्रबंधन के तहत छपने वाले पहले समाचार पत्र *फ्रीडम्स जर्नल* का प्रकाशन आरंभ हुआ।

1831 - गुलामों के तकरीबन 200 विद्रोहों में सबसे विख्यात विद्रोह का नेतृत्व धर्म उपदेशक नैट टर्नर ने किया।

1839 - सिंक्व ने एमिस्टाड नामक जहाज़ में बगावत का नेतृत्व किया।

1847 - फ्रैडरिक डगलस ने गुलामी उन्मूलन के लिए अपना समाचार पत्र *नॉर्थ स्टार* आरंभ किया।

1849 - हैरिएट टबमैन गुलामी से बचने के लिए मैरीलैण्ड से भागीं। उन्होंने आगे चलकर 300 से अधिक गुलामों की बच भागने में मदद की।

1850 - कांग्रेस ने भगोड़े गुलामों से संबंधित कानून पारित कियाः इसके तहत भगोड़े गलामों को उत्तर में धर-पकड़ कर दक्षिण वापस लाया जा सकता था।

1852 - हैरिएट बीचर स्टोव की रचना *अंकल टॉमस केबिन* प्रकाशित हुई। गुलामी की क्रूरता से संबंधित यह उपन्यास आज भी बेस्ट सैलर है।

1854 - कैनसास-नेब्रास्का कानून ने तनाव बढ़याः नई सीमाओं के लोग इस बात पर मत दे सकते थे कि वे गुलाम बनेंगे या आज़ाद।

1857 - ड्रेड स्कॉट फैसलाः सर्वोच्च अदालत ने कहा कि कोई भी काला व्यक्ति, गुलाम हो या आज़ाद, संयुक्त राज्य का नागरिक नहीं बन सकता। काँग्रेस गुलामी के विस्तार को रोक नहीं सकती।

1859 - जॉन ब्राउन ने हार्पर्स फैरी में संयुक्त राज्य के शस्त्रागार पर हमले का नेतृत्व किया और वे उस पर काबिज़ हुए।

1861-1865 - गृह युद्ध। कुल 200,000 सैनिकों में से लगभग 40,000 काले सैनिकों ने यूनियन की ओर से युद्ध में हिस्सा लिया।

दिसम्बर 1865 - तेरहवें संविधान संशोधन ने आधिकारिक रूप से देश भर में गुलामी को समाप्त किया। 40 लाख काले अमरीकियों को आज़ादी मिली।

मेरी एन शैड कैरी

9 अक्तूबर 1823
विल्मिंगटन, डेलवेयर
5 जून 1893
वॉशिंगटन डी.सी.

"थक जाना जंग लग जाने से बेहतर है।"

सजर्नर ट्रूथ ने गुलामी की त्रासदी पर एक इन्सानी चेहरा चस्पां किया था। मेरी एन शैड का तरीका था एक अखबार का सम्पादन। ऐसा करने वाली वे पहली अफ्रीकी-अमरीकी महिला थीं।

मेरी एन ऐसे माता-पिता के घर जन्मीं जिन्होंने अपना घर उन लोगों के लिए कई रातों को खोला, जो दक्षिण की गुलामी से बच कर भाग रहे थे। हालांकि अब्राहम और हैरिएट शैड आज़ाद थे, उनके तेरह बच्चे डेलवेयर में स्कूल नहीं जा सकते थे, क्योंकि वे काले थे। मेरी एन की शिक्षा पेन्सिलवेनिया के एक क्वेकर स्कूल में हुई। जैसे ही उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की वे विल्मिंगटन लौटीं और अफ्रीकी-अमरीकी बच्चों को पढ़ाने लगीं। तब वे सिर्फ सोलह बरस की थीं पर उनमें दृढ़ता की कमी नहीं थी। अपना ज्ञान बांटने के लिए वे पर्याप्त बड़ी थीं।

मानो दुनिया में अन्याय काफी न था, 1850 में भगोड़े गुलाम से संबंधित कानून पारित हुआ। जो गुलाम दक्षिण से भाग कर उत्तर के मुक्त राज्यों में पहुँच जाते थे, अब उन्हें भी धर-पकड़ कर दक्षिण में बैठे उनके मालिकों को लौटाया जा सकता था। इनाम के लिए इन गुलामों की धर-पकड़ करने वाले इस बात की खास परवाह नहीं करते थे कि वे पकड़ किसे रहे हैं: कोई भी काला इन्सान होना काफ़ी था। सो मेरी एन और हज़ारों अफ्रीकी-अमरीकी उनसे बचने कनाडा भागे।

मेरी एन ने एक साप्ताहिक अख़बार निकालने में मदद की। *द प्रोविंशियल फ्रीमैन* उन कालों के लिए सूचनाओं से भरा होता था जो सुदूर उत्तर में नया जीवन गढ़ना चाहते थे। मेरी एन पढ़ाती रहीं, लिखती रहीं और इन व्यस्तताओं के बीच उन्होंने थॉमस कैरी से विवाह करने का समय भी निकाला। अपने साप्ताहिक अख़बार के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उसके लिए धन इकट्ठा करने वे संयुक्त राज्य अमरीका लौटीं। वहाँ उन्होंने कलर्ड (काले) अमरीकियों के "नेक कामों और उनके साहस" पर भाषण दिए। बाद में मेरी एन यूनियन सेना की भर्ती अफसर बनीं, संघ की नीली वर्दियों में काले सैनिकों ने गृह युद्ध में अपनी बहादुरी का प्रदर्शन किया। जिस कारण अंततः 1865 में गुलामी को समाप्त किया गया।

जहाँ तक मिसेज़ कैरी और लाखों काले अमरीकियों का सवाल था, आज़ादी एक चीज़ थी - बेशक एक शानदार चीज़ थी, पर न्याय पाना कुछ और ही था। कालों और महिलाओं की लोकतंत्र में कोई आवाज़ ही नहीं थी, क्योंकि उन्हें मत देने का अधिकार ही नहीं था। मताधिकार को उस बन्द मुट्ठी को खोल कर छीनना अभी बाकी था।

मेरी एन शैड कैरी माँ बनी और तब विधवा। इस बीच वे लगातार पूर्ण नागरिक समानता के मसले पर लिखती और बोलती रहीं। दिन के वक्त वे वॉशिंगटन डी.सी. में एक स्कूल की प्रधानाध्यापिका थीं। पर रात को वे हार्वर्ड विश्वविद्यालय में कानून पढ़ने जातीं। 1860 में, जब वे साठ वर्ष की हुईं, उन्होंने उन महिलाओं को संगठित किया जिनका लक्ष्य मताधिकार पाना थाः कलर्ड विमेन्स प्रोग्रेसिव फ्रैंचाइसी एसोसिएशन। वे अमरीकी इतिहास की दूसरी महिला थीं जिसने कानून की डिग्री पाई और उसके पेशेवर उपयोग का अधिकार भी पाया (शार्लेट ई. रे, 1872, पहली महिला थीं)। मेरी एन शैड कैरी ने अपना जीवन दुनिया को अधिक न्यायपूर्ण बनाने में 1893 की गर्मियों तक लगाया, जब वह अंततः चुक गया।

एलिज़ाबैथ केडी स्टैन्टन

12 नवम्बर 1815
जॉनस्टाउन, न्यू यॉर्क
26 अक्तूबर 1902
न्यू यॉर्क, न्यू यॉर्क

"यह अधिकार हमारा है।
हम इसे निश्चित रूप से पाएंगे।
और उसका उपयोग हम करेंगे।"

बड़े होते समय लिज़ी को यह बात खटकती रही थी कि उसके पिता जज केडी सोचते थे कि काश वह लड़का होती। एमा विलर्ड फीमेल सेमिनरी से ऑनर्स के साथ पढ़ाई पूरी करने के बाद एलिज़बैथ ने हैनरी स्टैन्टन से विवाह किया। उस ज़माने में इसका मतलब था कि वे अपनी ज़िन्दगी की चाभी अपने पति को सौंप रही थीं। क्योंकि उस वक्त अगर कोई विवाहित औरत कोई नौकरी करती तो उसका वेतन उसके पति को मिलता था। अगर उसे विरासत में कोई खेत या पैसे मिलते तो ये भी उसके पति के ही होते। उसके बच्चे भी कानूनन पति के और सिर्फ़ उसके ही माने जाते थे। एक स्त्री न तो जूरी बन सकती थी, न किसी अनुबंध पर दस्तख़त कर सकती थी। लिज़ी यह सब देख खीजती-भुनभुनाती थी।

नव-दम्पत्ति दो बातों पर सहमत हुएः लिज़ी मिस्टर स्टैन्टन की आज्ञा का पालन करने का वादा नहीं करेगी। और दोनों ही गुलामी को भयंकर मानते थे। 1840 में जब वे विश्व गुलामी विरोधी सम्मेलन में हिस्सा लेने गए, मिसेज़ स्टैन्टन केवल श्रोता ही बनी रहीं। सोचिए क्यों?

1848 में एलिज़ाबैथ केडी स्टैन्टन व क्वेकर पादरी लूसेरिटा मॉट ने अपनी बैठक बुलाई, जिसमें 300 से अधिक लोग शामिल हुए। सेनेका फ़ॉल्स, न्यू यॉर्क के इस पहले महिला अधिकार सम्मेलन में शिरकत करने वालों में फ्रैडरिक डगलस भी थे। भागीदारों ने एक छोटे कद की बत्तीस वर्षीय माँ को अपनी "भावनाओं की घोषणा" को पढ़ते सुना। उन्होंने थॉमस जैफरसन के शब्दों में सुधार किया था - "सभी पुरुष और स्त्री समान रचे गए हैं!" एलिज़ाबैथ केडी स्टैन्टन ने वह वैचारिक चिन्गारी सुलगाई जिसने आगे चल कर बालिकाओं के रूप में पैदा हुई नागरिकों के लिए मताधिकार जीता।

इस सम्मेलन के तकरीबन तीन वर्ष बाद 13 मई 1851 में, एमेलिया ब्लूमर के साथ एक आकस्मिक मुलाकात के बाद महिला अधिकार आन्दोलन पूरी गंभीरता से आरंभ हुआ। एमेलिया एक पत्रकार थीं, जो स्त्रियों को उनके भारी स्कर्टों से आज़ाद करने के लिए जानी जाती थीं। एमेलिया ने अपने दो मित्रों का आपस में परिचय करवाया। तीनों ही 'ब्लूमर' पहनने लगीं, जिसका फैशन जल्द ही खत्म हो गया। पर लिज़ी केडी स्टैन्टन व सूज़न बी. एन्थनी की सोझेदारी पचास वर्षों तक बनी रही।

लिज़ी और सूज़न ने, अथक यात्राएं करने, अपनी बात लोगों तक पहुँचाने और दुनिया को सुधारने में अपना जीवन लगा दिया। "मैंने वज्र गढ़े," लिज़ी ने कहा, "और सूज़न ने उनसे वार किया।" उन्होंने शराबबन्दी (टेम्परेन्स) के लिए और गुलामी के विरुद्ध काम किया। उन्होंने न्यू यॉर्क में कानून बनाने वालों पर दबाव बना महिलाओं को उनकी खुद की कमाई और उनके बच्चों पर बराबर का अधिकार दिलवाया। महिलाओं के लिए मताधिकार के उनके संघर्ष में उन्होंने अनेकानेक बाधाएं झेलीं। संविधान के 15वें संशोधन ने अंततः काले पुरुषों को मत देने का अधिकार दिया - वह दिन शानदार था। पर महिलाएं तब भी मत नहीं दे सकती थीं। गुलामी के ख़िलाफ़ लड़ने वाली सजर्नर ट्रूथ, लुसेरिटा मॉट और हैरिएट टबमैन आदि को इस विजय को मिश्रित भावनाओं के साथ स्वीकारना पड़ा - महिलाओं को छोड़ दिए जाने की कड़वाहट के साथ।

इस कदम से बेहद नाराज़ लिज़ी और सूज़न ने राष्ट्रीय महिला मताधिकार एसोसिएशन का गठन किया जिसका लक्ष्य संयुक्त राज्य अमरीका के कानून को बदलना और स्त्रियों के लिए आठ घंटे का कार्य दिवस, और पुरुषों के बराबर भुगतान पाना था। मिसेज़ स्टैन्टन ने महिला मताधिकार संबंधी संशोधन लिखे और 1878 में कांग्रेस के समक्ष पेश किए। पर उनके जीवित रहने तक यह संशोधन पारित नहीं हो सका।

एलिज़बैथ स्टैन्टन किसी क्रान्किारी जैसी नहीं दिखती थीं, पर लोग उन्हें वही मानते थे। उनके घुंघराले बालों के नीचे एक सशक्त दिमाग था, जिसमें उन सभी विषयों पर विचार कुलबुलाते थे जो स्त्रियों को स्वतंत्र चिन्तन से दूर रखते थे, मय विवाह और धर्म के। आँखें धुंधली, शरीर भारी और सुस्त हो जाने के बावजूद उनका दिमाग ओज से चमकता रहा। लिज़ी केडी स्टैन्टन की 87 वर्ष की आयु में मृत्यु हुई। उनकी वफ़ादार मित्र सूज़न ने लिखा "यह कैसी भयाानक चुप्पी है!"
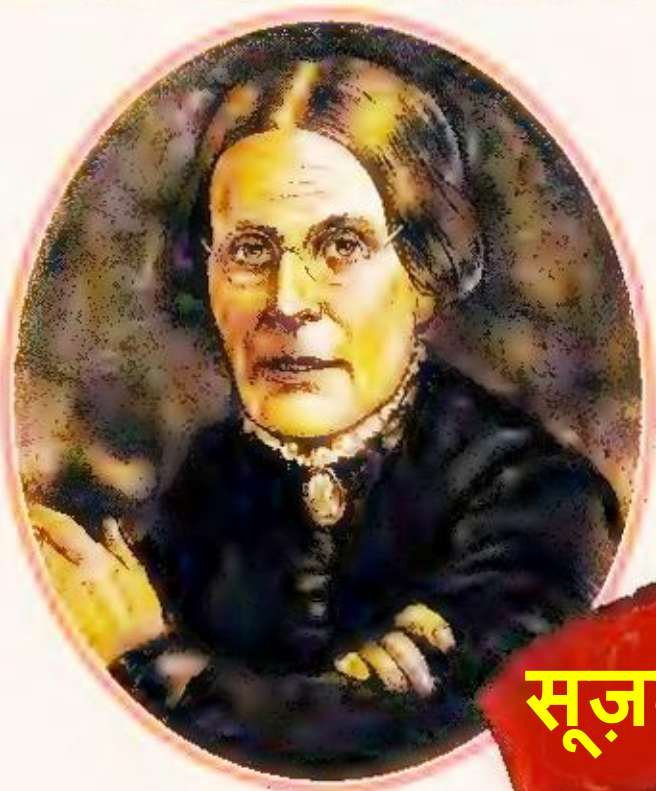
सूज़न बी. एन्थनी

15 फरवरी 1820
एडम्स, मैसाच्युसैटस्
13 मार्च 1906
रॉचैस्टर, न्यू यॉर्क

"असफलता असंभव है।"

कई महिलाएं मताधिकार के विरुद्ध थीं। वे सोचती थीं कि राजनीति असभ्य है, और शोर मचाने वाली स्त्रियाँ महिलाओं के नाम पर धब्बा हैं। लोग अविवाहित सूज़न बी. एन्थनी का मखौल उड़ा उन्हें कठोर चेहरे वाली 'डायनमो' कहते, और एलिज़ाबैथ केडी स्टैन्टन को विचित्र विचारों वाली लेसदार 'डम्पलिंग' कहते। पर जब 1902 में मिसेज़ स्टैन्टन की मृत्यु हो गई अख़बारों ने इन "विख्यात महिलाओं" की मित्रता समाप्त होने पर टिप्पणी की। लिज़ी ने सूज़न को झकझोरा था और सुज़न ने दुनिया को। पचास साल तक धकियाते रहने के उनके प्रयासों ने उन्हें सम्मान तो दिलवाया, पर मत देने का संवैधानिक अधिकार तब तक भी नहीं मिल सका था। सो बयासी वर्ष की सूज़न बी. एन्थनी जुटी रहीं।

जिस वक़्त 31 वर्षीय क्वेकर, स्कूली शिक्षिका की मुलाकात मिसेज़ स्टैन्टन से हुई थी, मिस एन्थनी कई नामी-गिरामी शराबबन्दी समर्थकों और गुलामी उन्मूलकों से मिल चुकी थीं, जिनमें मशहूर वक्ता फ्रैडरिक डगलस और बॉस्टन के प्रकाशक विलियम लॉयड गैरिसन शामिल थे। सूज़न ऊर्जा से भरी थीं और इन लोगों के प्रयासों से जुड़ने को उत्सुक।

वे हर जगह जातीं, ज्ञापन बांटतीं, बैठकें आयोजित करतीं और भाषण देतीं। वे घोड़ागाड़ियों भाप के जहाज़ों, और रेलगाड़ियों से वहाँ तक पहुँचती जहाँ लोग इकट्ठा होते। सूज़न और एलिज़बैथ ने 1868 से 1870 के दौरान एक अख़बार का प्रकाशन किया *द रेव्योल्यूशन* । मिस एन्थनी ने जुलूस, सम्मेलन, कार्य समूह आयोजित किए। वे अन्य संगठनों के साथ भी जुड़ कर काम करती रहीं, जैसे विमेन्स् क्रिशच्यन टैम्परेंस यूनियन (डब्ल्यू.सी.टी.यू.), नैशनल एसोसिएशन ऑफ कलर्ड विमेन, तथा अमेरिकन विमेन सफरेज एसोसिएशन, जिसकी स्थापना लूसी स्टोन ने 1869 में की थी। 1892 में 'अजेय सूज़न' इन दोनों संस्थाओं के विलय के बाद, बनी नैशनल विमेन सफरेज एसोसिएशन (एनएडब्ल्यूएसए) की अध्यक्षा बनीं।

सूज़न ने महिला मताधिकार संघर्ष के इतिहास को चार खण्डों में दर्ज करने में मदद की। इसका एक अध्याय था 1872 का राष्ट्रपति पद का चुनाव। विक्टोरिया सी. वुडहल ने, जो पहले शेयर दलाल और ज्योतिष रह चुकी थीं, जिन्होंने "मुक्त प्रेम" का नारा दिया और "इस फ़र्जी" लोकतंत्र को उलटने की मांग की थी, वे इस सर्वोच्च पद के लिए खड़ी हुईं। उन्होंने अख़बारों की सुर्खियाँ बटोरीं। सूज़न बी. एन्थनी भी चर्चा में रहीं क्योंकि उन्होंने मत देने की कोशिश की (वे रिपब्लिकन यूलिसेस ग्रान्ट को मत देना चाहती थीं, मिस वुडहल को नहीं)। इस हिमाकत के लिए 52 वर्षीय शिक्षित नागरिक को इसलिए गिरफ्तार किया क्योंकि वे अपने देश के

लोकतांत्रिक सरकार के गठन में हिस्सेदारी करना चाहती थीं। उन पर मुकदमा चला और 100 डॉलर का जुर्माना किया गया। "मैं इस अन्यायपूर्ण जुर्माने का एक डॉलर तक कभी नहीं दूँगी," यह उस महिला ने कहा, जिसका चेहरा 1979 में एक डॉलर के सिक्के पर छापा गया।

अपनी घनिष्ठ सखी मिसेज़ स्टैन्टन को खोने के बाद भी दुबली-पतली, रुपहले बालों वाली सूजऩ बी. एन्थनी ने सफ़र करना और अपनी बात कहना जारी रखा। "आंट सूज़न" ने युवा सहकर्मियों, जैसे रैवरन्ड आना हार्वर्ड और कैरी चैपमैन कार्ट के साथ काम किया। उनके संघर्ष को अंजाम तक पहुँचाने का काम सूज़न की "भांजियों" की पलटन पर छूटा। 86 वर्ष की उम्र में 'अजेय सूज़न' की मृत्यु हुई। उन्हें ताउम्र "ज़रा सा न्याय, पर उससे अधिक कुछ नहीं मिला ... ।" यह कितना क्रूर प्रतीत होता है।

महिला अन्दोलन
NOW
WOMEN
UNITE
Sisterhood
is POWERFUL
महिला

कालक्रम
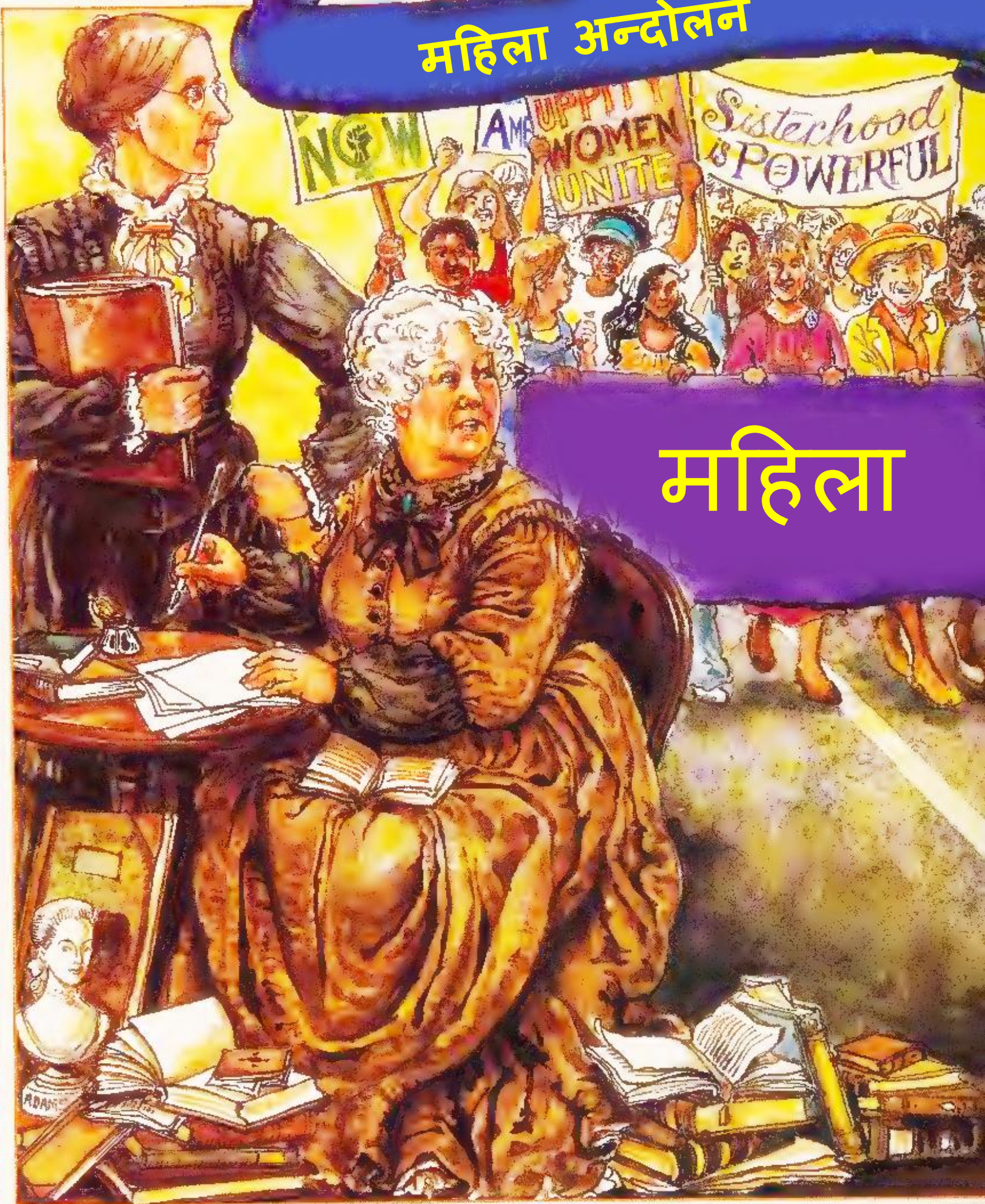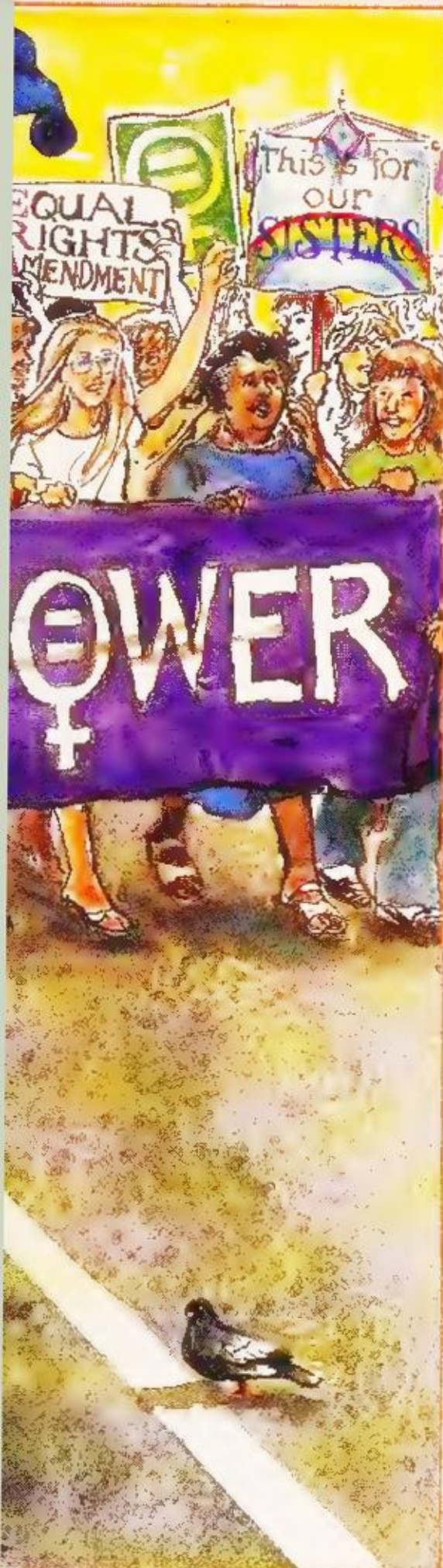
31 मार्च 1776 - एबिगेल एडम्स ने अपने पति जॉन को लिखाः “स्त्रियाँ खुद को उन कानूनों से बाध्य नहीं मानेंगी, जिनमें हमारी आवाज़ शामिल न हो ...”

1792 - मेरी वौलस्टोन क्राफ्ट ने अपनी पुस्तक *द विन्डिकेशन ऑफ द राइटस् ऑफ विमेन* में ऐलान किया कि औरतें घरेलू यौनिक जीवों से अधिक हैं।

सितम्बर 1821 - एमा हार्ट विलर्ड ने ट्रॉय, न्यू यॉर्क में लड़कियों के लिए सैकण्डरी स्कूल खोला।

19-20 जुलाई 1848 - एलिज़बैथ केडी स्टैन्टन, लूसरिटा मॉट व अन्य ने वेसलियन चैपल, सेनेका फ़ॉल्स, न्यू यॉर्क में एक सम्मेलन की घोषणा की ताकि महिलाओं की सामाजिक, नागरिक व धार्मिक स्थितियों पर चर्चा की जा सके।

1854 - मिसेज़ स्टैन्टन विवाहित स्त्रियों की उनकी आय व बच्चों पर उनके अधिकार के लिए लड़ीं, उन्होंने न्यू यॉर्क राज्य की विधान सभा को संबोधित किया।

1855 - लूसी स्टोन ने विवाह किया और वैवाहिक कानूनों का विरोध करते हुए अपना नाम बदले बिना विवाह के पहले का नाम कायम रखा।

1868 - सूज़न बी. एन्थनी व मिसेज स्टैन्टन ने अपना अख़बार *द रेव्योल्यूशन* का प्रकाशन आरंभ किया।

1869 - महिला अधिकार की सक्रियकर्मियों ने नैशनल विमेन सफरेज एसोसिएशन तथा अधिक रूढ़िवादी अमेरिकन विमेन सफरेज एसोसिएशन की स्थापना की। 1890 में इन दोनों संस्थाओं का विलय हुआ।

1869 - वायोमिंग क्षेत्र की मलिाओं को मत देने का अधिकार दिया गया।

3 फरवरी 1870 - 15वें संविधान संशोधन की पुष्टि हुई सभी पुरुषों को, चाहे उनकी नस्ल या रंग कुछ भी क्यों न हो, मत देने का अधिकार मिला।

1923 - एलिस पॉल द्वारा लिखित समान अधिकार संशोधन कांग्रेस में मिस पॉल तथा नैशनल विमेन्स् पार्टी द्वारा पेश किया गया।

1941-1945 - लाखों महिलाओं ने, जिनका प्रतीक रोज़ी द रिवेटर थीं, युद्ध से जुड़े उद्योगों मे काम किया।

1963 - बैटी फ्रीडन की पुस्तक *द फैमिनिन मिस्टीक* का प्रकाशन हुआ। उन्होंने 1966 में नैशनल आर्गेनाइज़ेशन फॉर विमेन के गठन में मदद की।
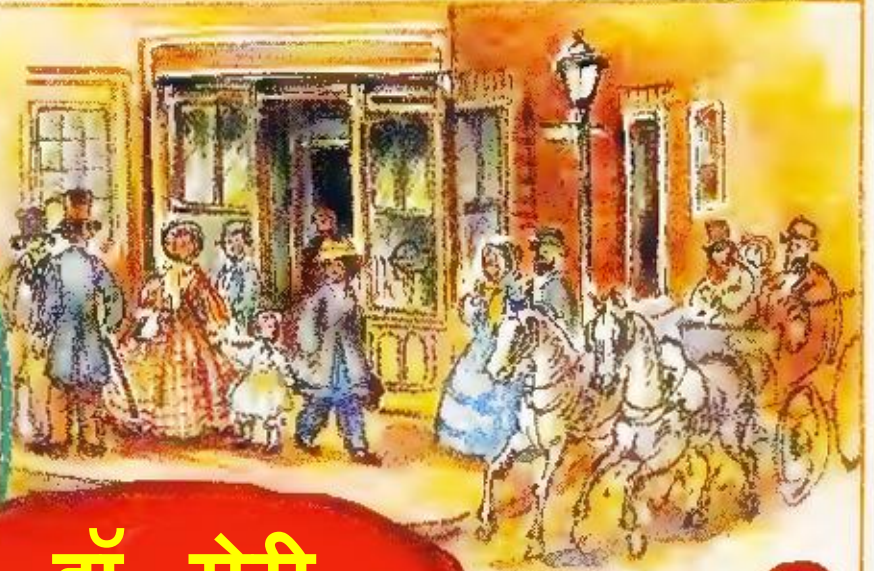
डॉ. मेरी एडवर्डस् वॉकर

26 नवम्बर 1832
ओस्वेगो, न्यू यॉर्क
21 फरवरी 1918
ओस्वेगो, न्यू यॉर्क

"काश लोग यह समझ पाते कि मैं इस तरह की पोशाक सर्वोच्च, शुद्ध, और श्रेष्ठतम सिद्धान्तों के कारण पहनती हूँ।"

मेरी एडवर्डस् अमरीका की पहली महिला नहीं थीं जो क्रूर बाधाओं को लांघ मेडिकल कॉलेज में पढ़ सकीं। पर वे अमरीका की पहली महिला थीं जिन्होंने सेराक्यूज़ मेडिकल कॉलेज में 1855 में स्नातक अध्ययन पूरा करने के बाद ओहायो में अपना क्लिनिक आरंभ किया। बाद में उन्होंने अपने पति एल्बर्ट मिलर के साथ न्यू यॉर्क में अपना क्लिनिक खोला। एक महिला चिकित्सक? लोगों ने उनसे इलाज करवाने के बदले बीमार रहना पसन्द किया। उनका क्लिनिक कुछ ही दिनों में ठप्प हो गया और उनकी शादी भी।

मेरी एडवर्डस् पहली महिला नहीं थीं जिन्होंने "तुर्की पतलूनें" पहनी हों, जो वे घुटनों तक लम्बी स्कर्ट के नीचे पहनती थीं। पर उन्होंने और अन्य महिलाओं ने जिन्होंने उन्हें पहना, आम जनता को चौंकाया। राह चलते लोग उन्हें घूरते, मखौल उड़ाते और अपमान करते। यह ऐसा अजूबा जो था जिसे पहले लोगों ने देखा न थाः पतलून, जिसे एक स्त्री पहने हो! पत्रकार अमेलिया ब्लूमर ने कई सेर भारी, ज़मीन पर लथड़ती स्कर्टों, तार से बने घेरों, पेटिकोटों और तंग कंचुकों से मुक्ति पाने के अधिकार पर लिखा। बात केवल फैशन की नहीं थी। यह स्त्री के आज़ादी से चलने, सोचने के अधिकार की बात थी। स्त्रियाँ झालरों से सज़ी एक गुड़िया भर नहीं हैं।

पोशाक सुधारक महिलाओं ने जब मखौल झेल कर थकने के बाद "ब्लूमर्स" पहनना बन्द कर दिया, तब भी बुज़ुर्गवार डॉ. वॉकर महिलाओं की पोशाकों के बदले पतलून पहन स्थापित व्यवस्था को दुखी करती रहीं। एक बार तो उन्हें पुरुषों का सूट, मय बो-टाई और लम्बे टोप को पहने गिरफ्तार भी किया गया!

उनका यह प्रतिवाद और संघर्ष आजीवन चला। पर जब बराबरी के लिए औरतों के संघर्ष की बात की जाती है, तब मेरी एडवर्डस् को याद नहीं किया जाता। आप सूज़न बी. एन्थनी और एलिज़ाबैथ केडी स्टैन्टन को याद करते हैं। मेरी वॉकर ने शराबबन्दी के मुद्दे पर कई भाषण तो दिए पर वे टैम्परैन्स की सबसे प्रसिद्ध अभियानकर्ता नहीं थीं। यह श्रेय फ्रांसिस विलर्ड को जाता है।

फिर भी अपने समय के सभी सुधारवादी तूफान आदर्शवादी मेरी वॉकर में साकार हुए थे। अगर 1861 में नागरिक युद्ध न भी शुरू हुआ होता, जिसने लाखों लोगों के जीवन को हमेशा के लिए बदल डाला, मेरी फिर भी एक विलक्षण महिला थीं। उन्होंने वॉशिंगटन अस्पताल में सैनिकों की देखभाल की और 1863 तक वे संयुक्त राज्य की सेना की पहली महिला सर्जन बन चुकी थीं। वे युद्ध सीमा के पीछे काम करती रहीं और कॉन्फिडरेट व यूनियन, दोनों ही सेनाओं के सैनिकों का इलाज करती रहीं। उन्होंने जासूसी तक का काम किया।

10 अप्रेल 1864 को एक कॉन्फिडरेट संतरी ने डॉ. वॉकर को बन्दी बनाया और उन्हें रिचमण्ड, वर्जीनिया ले गया, जो कॉन्फिडरेट राजधानी थी। उन्हें चार माह बाद रिहा किया गया। 11 नवम्बर 1865 में राष्ट्रपति एन्ड्रू जॉनसन ने उन्हें सर्वोच्च सैन्य पुरस्कार, काँग्रेशनल मेडल ऑफ ऑनर से नवाज़ा।

युद्ध के बाद मेरी ने सुधार संबंधी अपने अनेक विचारों पर लिखा और भाषण भी दिए - जैसे महिलों के मताधिकार, जिस तरह की हास्यास्पद पोशाकें उन्हें पहननी पड़ती थीं। वे तम्बाकू, शराब और तंग कोरसेटस् (कंचुकी) के सख्त ख़िलाफ़ थीं। वे अपने मेडल को पुरुषों वाले काले कोट पर तब भी पहनती रहीं जब सरकारी अधिकारियों ने यह किया कि वे उस मेडल के लायक ही नहीं थीं। मेरी ने यह कहा कि वे चाहें तो कॉग्रेशनल मेडल को "मेरे मृत शरीर" से उतार ले सकते हैं। इसके साठ साल बाद राष्ट्रपति जिम कार्टर ने डॉ. मेरी वॉकर को आधिकारिक रूप से मेडल ऑफ ऑनर विजेता सर्जन होना स्वीकारा। किसी दूसरी महिला को यह सम्मान नहीं मिला है।

फ्रांसिस ई. विलर्ड
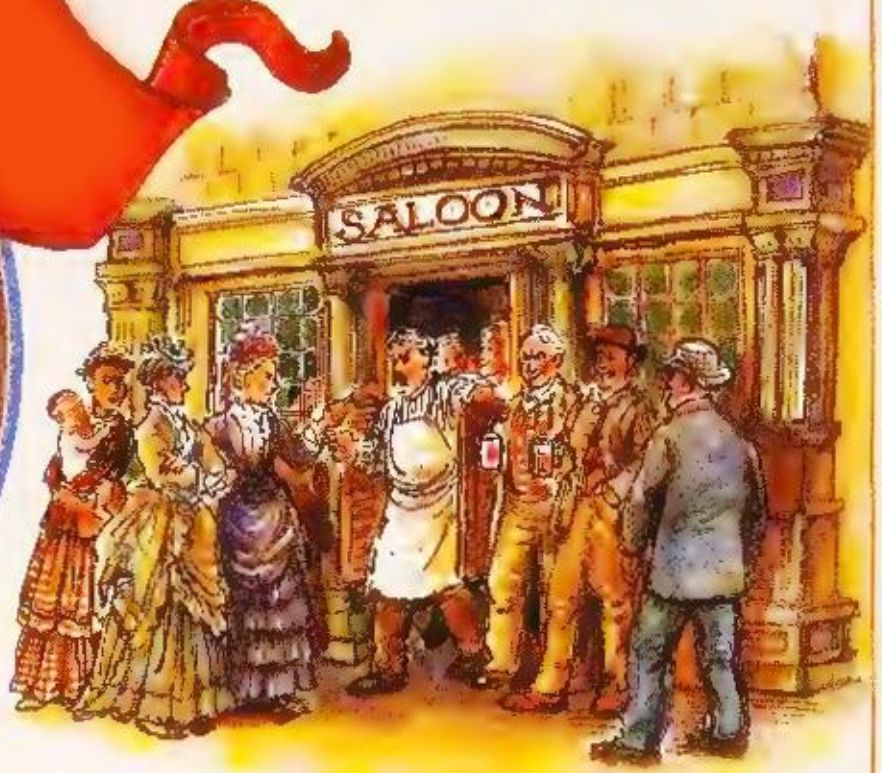
28 सितम्बर 1839
चर्चविल, न्यू यॉर्क
18 फरवरी 1898
न्यू यॉर्क, न्यू यॉर्क

"एक कर्म बोओ तो आदत की फसल काटोगे; एक आदत बोओ तो चरित्र मिलेगा; एक चरित्र बोओ तो तकदीर की फसल काटोगे।"

ज़ैनोफोन नामक ग्रीक दार्शनिक ने टैम्परेन्स (संयम) की परिभाषा कुछ इस प्रकार की थी। सभी स्वस्थ चीज़ों में अति से बचना और सभी नुकसानदेह चीज़ों से पूरा परहेज़। ऐसा नीरस नज़रिया किस प्रकार एक राजनीतिक जन-आन्दोलन बना, जिसमें शराबखानों को ध्वस्त किया गया, गुण्डों की भूमिका रही, और संविधान में संशोधन लाया गया। शराबबन्दी अभियान में यह सब हुआ - क्योंकि इस अभियान में शिरकत करने वालों में अधिकतर औरतें थीं और उनके लिए - "सभी नुकसानदेह चीज़ों" का मतलब था शराब।

मताधिकार पाने और गुलामी को खत्म करने के लिए जो स्त्रियाँ लड़ रही थीं, उनमें से कई शराब नहीं पीती थीं। उन्हें इस बात का भी प्रत्यक्ष अनुभव था कि पियक्कड़पन घर-परिवार और समाज को नष्ट करता है। जिस विशाल संगठन ने शराब के ख़िलाफ़ जंग छेड़ी वह था वुमनस् क्रिश्चियन टैम्परेंस यूनियन (डब्ल्यूसीटीयू) और उसकी नेत्री थीं फ्रांसिस विलर्ड। उनके प्रशंसक उन्हें 'भविष्यवक्ता' और 'श्रेष्ठतम अमरीकी महिला' कहते थे और आलोचक 'सबसे ख़तरनाक'।

फ्रांसिस, विस्कॉन्सिन की लड़की थीं जो बाद में ईवनस्टन, इलिनॉइस के महिला कॉलेज की अध्यक्षा बनीं। लगभग उसी समय प्रार्थनाएं और भजन गातीं "महिला धर्मयोद्धा" न्यू यॉर्क व ओहायो के शराबखानों में घुसतीं, वहाँ काम करने वालों से शराबखाना बन्द करने का अनुरोध करतीं। जल्द ही क्लीवलैण्ड, ओहायो में डब्ल्यूसीटीयू का गठन हुआ। फ्रांसिस ई. विलर्ड इसकी दूसरी अध्यक्षा बनीं। उन्होंने इसे राष्ट्रीय तब अंतर्राष्ट्रीय संगठन में तब्दील किया।

मिस विलर्ड के दिमाग में शराब के अलावा भी कई मुद्दे थे। चश्मों के पीछे छिपी उनकी नीली आँखें इस संकल्प से दमकती थीं कि तेज़ी से बदल रही दुनिया को सुधारने के लिए वे "सब कुछ" करें। कठिन समय ने ग्रामीणों को उनके खेतों से पलायन करने पर मजबूर किया था। अमरीकी शहर ऐसे लोगों से अटे पड़े थे जो बेहतर जीवन की तलाश में आए थे। वे अपने कष्ट भुलाने शराबखानों में जाते थे। पश्चिम में कैरी ए. नेशन ने इस समस्या का जवाब तलाश लिया था। प्रत्यक्ष कुछ करने वाली यह महिला 1890 के दशक में शराबखानों में घुसतीं और कुल्हाड़ी से तोड़-फोड़ करतीं। वे इस कार्रवाई को "हैचरटेशन" कहती थीं।

संयुक्त राज्य अमरीका के हरेक राज्य में फ्रांसिस ने मद्यपान, वेश्यावृत्ति और अश्लील किताबों के ख़िलाफ़ भावपूर्ण भाषण दिए। उन्होंने लोगों से अपनी आदतें, अपने शहर और कैदखानों को सुधारने को उकसाया। उन्होंने गुहार लगाई कि बच्चों से खदानों व कारखानों में बारह घंटे काम करवाने के बदले उन्हें पढ़या-लिखाया जाए। उन्होंने कार्यस्थल में न्याय और इतवार को ख़रीददारी बन्द करने का दबाव डाला। "हर स्त्री को," वे तर्क करतीं, "अपने घर की सुरक्षा करने के लिए हथियार के रूप में मत की ज़रूरत है।" जल्द ही फ्रांसिस के साथ 150,000 आतुर महिलाओं की सेना थी, जो पवित्रता दर्शाने के लिए सफ़ेद और मताधिकार के लिए पीले रंग का रिबन पहना करती थीं।

मिस विलर्ड ने अपने अंतिम वर्षों में भाषण दिए, नैशनल विमेनस् काउन्सिल की स्थापना में मदद की, और कई किताबें लिखीं। उनके और उनके अनुयायियों के सतत् प्रयासों के चलते 1919 में 18वाँ संविधान संशोधन पारित हुआ जिसने 1930 से 1933 तक शराब बनाने, बेचने या उसके परिवहन को एक संघीय जुर्म करार दिया। क्या लोगों ने अनेक तरीकों से इस कानून को तोड़ने की कोशिश की? बेशक की! और 1933 में शराबबन्दी खत्म कर दी गई। पर यह फ्रांसिस विलर्ड की 58 वर्ष की उम्र में मृत्यु के काफ़ी बाद हुआ। फ्रांसिस ने जिन सामाजिक सुधारों को प्ररित किया उन्होंने उस महान कार्य की ज़मीन तैयार की - यह कार्य था अमरीका को आकार देने का।

मेरी ई. लीज़

11 सितम्बर 1853
रिजवे, पैन्सिलवेनिया
29 अक्तूबर 1933
कैलिकून, न्यू यॉर्क

"वॉल स्ट्रीट देश का मालिक है। पर जब मैं रेशमी टोप पहने पूरब वासियों से निपट लूंगी, वे जान लेंगे कि कैनसास के परेरी (घास के मैदान) आग में धधक रहे हैं।"

1893 में हज़ारों अमरीकी शिकागो के विश्व मेले में गए। वहाँ का एक बड़ा आकर्षण था उग्र "पेटिकोट में पैट्रिक हैनरी"। उनके विरोधी उन्हें 'चीखने वाली मेरी एलन' और 'कैनसास की अजगरनी' कहते थे। वे काले बालों, नीली आँखों और दमदार आवाज़ वाली मेरी ई. (जो दरअसल एलिज़ाबैथ का संक्षिप्त रूप था) एलन थीं। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में, जब अमरीका वित्तीय संकट में था, वे अमरीका की सबसे मशहूर स्त्री थीं।

मेरी ने कठिनाइयों का सामना करना कैनसास में सीखा था। मेरी क्लायन्स एक स्कूली शिक्षिका के रूप में पश्चिम गईं, जहाँ उन्होंने चार्ल्स लीज़ से विवाह किया। उनका और लाखों अन्य किसानों का हाल ठीकठाक ही होता अगर बरसात कुछ ज़्यादा हुई होती, बर्फानी तूफान और टिड्डों के हमले कुछ कम होते। अगर फसलों की कीमत इतनी कम न होती और रेल कम्पनियाँ किसानों का माल ढ़ोने और कपास के भण्डारण के लिए इतना पैसा न मांगतीं। अगर बैंक बीज के लिए उधार लिए गए पैसों के चुकाने के वक्त किसानों से इतना ब्याज न वसूलते। इन थके-हारे किसानों ने पूर्व की ओर सफ़र करते समय अपने वाहनों पर यह जुमला चस्पां किया थाः ईश्वर पर किया था भरोसा; पर कैनसास में हुए हम खस्ताहाल।

मेरी के पति विचिता एक दवाखाने में काम करने लगे। मेरी ने कपड़े धोने के तसले पर टिका कर कानून की किताबों का अध्ययन शुरू किया। वे जितनी ज़ोर से कपड़े रगड़तीं, उतनी ही ज़ोर से सोचती जातीं। संयुक्त राज्य एक सम्पन्न देश था, उसकी ज़मीन उपजाऊ थी पर किसान ग़रीब थे। दुनिया की अग्रणी औद्योगिक शक्ति के कारखाने धुंआ उगलते थे, पर मज़दूर ग़रीब थे। धरती के पेट से कच्ची धातुएं और कोयला खोदा जा रहा था पर खदान मज़दूर बेहाल थे। तो सारा पैसा जा कहाँ रहा था? उसका निवेश रेलमार्ग बनाने, कारखानों और खानों में किया जा रहा था - और जो चन्द लोग इनके मालिक थे मुनाफा उनकी जेबों में जा रहा था। वे लालची राजनीतिज्ञों को घूस देते, ताकि सरकार उनके पक्ष में बनी रहे।

मेरी के विचार उस रानीतिक बवंडर के साथ बहे जा रहे थे जो देश भर में चक्कर काट रहा था। किसान और मज़दूर अपनी युनियनें बना रहे थे - तो उनका पक्ष लेने वाला एक रानीतिक दल क्यों न बने? ऐसा राजनीतिक दल जो अधिक ईमानदार सरकार के लिए संघर्ष करे। सरकार जो यह सुनिश्चित करे कि लोगों को इतना भुगतान तो मिले कि वे सम्मान की ज़िन्दगी बिता सकें। लोग चाहते थे कि अमरीकी खज़ाना विभाग अधिक नोट छापे और सिक्के गढ़े। बेशक उससे कीमतें बढ़तीं, पर मात्रा तो बढ़ती। इस राजनीतिक बवंडर को (जिसने कई पुरुषों को 1892 के चुनावों में जीत दिलाई) पॉप्युलिज़म (जनवाद) कहा गया। इस विचारधारा की सबसे मशहूर आवाज़ थी वकील मेरी ई. लीज़। उन्होंने जनता के आक्रोश को शब्द दिए, "हम जनता के साथ हैं पर कॉरपोरेशनों (निगमों) के ख़िलाफ़ - नश्वर माँस-मज्जा के साथ हैं पर दौलत के ख़िलाफ़।" देश भर में, काले वस्त्र पहने मेरी ने लोगों को शराबबन्दी, महिला मताधिकार और किसानों के लिए न्याय पर अपने जुनूनी विचारों से उकसाया।
जिन शब्दों के लिए वे मशहूर हैं, वे थेः
"किसानों को ज़रूरत है कि वे मक्का कम उगाएं और हंगामा अधिक खड़ा करें!" उनका मानना था कि यह सुझाव "बिलकुल सही सुझाव है।"

पीपल्स पार्टी तो खत्म हो गई पर उसके विचार अब भी हवा में मौजूद हैं। मेरी ई. लीज़ ने इन विचारों को पूरी ताकत के साथ उमड़ते-घुमड़ते देखा। यह सब 1930 के दशक की महामन्दी में सच्चाई में तब्दील हुआ।

आइडा बैल वैल्स-बारनैट

लिंचिंग (गैर-कानूनी हत्या) विरोधी आन्दोलनकारी

16 जुलाई 1863
हॉली स्प्रिंग्स, मिसिसिपी
25 मार्च 1932
शिकागो, इलिनॉइस

"पिंजरे में बंद एक कुत्ते या चूहे की मौत से अच्छा लड़ते हुए मरना है।"

6 दिसम्बर 1865 में जब 13वें संविधान संशोधन ने गुलामी को गैर-कानूनी बना डाला, जिम वैल्स और उनकी पत्नी लिज़ी बेहद खुश हुए होंगे। यह सोच कि उनकी तीन वर्षीय बेटी आइडा को अपना जीवन गुलामी में नहीं बिताना होगा।

आइडा ने अपने कस्बे हॉली स्प्रिंग्स में बने आज़ाद गुलामों के स्कूल में मन लगा कर पढ़ाई की। वह अपने नाना-नानी के घर गई हुई थी, जब उसे पता चला कि उसके माता-पिता बीमार हैं। जब तक वह घर लौटी, वे दोनों और उसका नन्हा भाई मर चुके थे। सोलह साल की आइडा ने अपने अन्य भाई-बहनों की देखभाल करने का संकल्प किया और स्कूली शिक्षिका बनीं।

1884 के बसन्त में आइडा हमेशा की तरह रेल से वुडस्टॉक, टैनेसी स्थित अपने स्कूल जा रही थीं। कन्डक्टर ने उन्हें महिला डब्बे से हट जाने को कहा ताकि गोरी सवारियों को एक काली औरत के साथ सफ़र न करना पड़े। आइडा को हटाने के लिए दो और पुरुषों की ज़रूरत पड़ी, तब कहीं जाकर वह अपमानित आइडा को ताने कसती सवारियों के बीच से निकाल पाया। आइडा ने रेलरोड कम्पनी पर मुकदमा ठोका। और 500 डॉलर का मुआवज़ा मंज़ूर हुआ - पर इस फैसले को राज्य की सर्वोच्च अदालत ने उलट दिया। आइडा निराश हुईं? हाँ। पर हताश? कतई नहीं।

आइडा रेलरोड के अपने अनुभव और उन "जिम-क्रो" कानूनों पर बात करने लगीं, लिखने लगीं, जो दक्षिण में कालों का दमन करते थे। अंततः आइडा बी. वैल्स, अल्पकालीन पत्रकार, और एक अख़बार *फ्री स्पीच एण्ड हैंडलाइट* की आंशिक मालकिन बनीं। वे अदालतों के बारे में लिखतीं जहाँ कालों पर अन्यायपूर्ण तरीकों से मुकदमें चलाए जाते थे और छोटे जुर्मों पर भारी सज़ा सुनाई जाती थी। जब आइडा ने काले बच्चों के खस्ताहाल और साधनहीन स्कूलों का बयान किया, उन्हें शिक्षिका के पद से हटा दिया गया। अगले साल 1892 में, जब उनके तीन मित्रों की जान ले ली गई, आइडा ने वह संघर्ष छेड़ा जिसके लिए वे मशहूर हुईं: भीड़ द्वारा कालों की गैर-कानूनी हत्या (लिंचिंग) के विरुद्ध धर्मयुद्ध।

गोरों की एक क्रुद्ध भीड़ ने मैम्फिस जेल पर धावा बोला, जहाँ तीन काले व्यवसायी बन्दी थे, (झूठे आरोपों पर)। उन्हें जेल से बाहर घसीटा गया और फाँसी लगा दी गई। उनकी विधवाओं और पितृहीन बच्चों को दिलासा देना आइडा के लिए नाकाफ़ी था। अपने जीवन की परवाह किए बिना आइडा वे सबूत इकट्ठा कर प्रकाशित करने लगीं ताकि अमरीकी जनता इन अपराधों की कड़वी-कठोर सच्चाई का सामना कर सके। उन्होंने लिखा कि 1884 से 1894 बीच "एक हज़ार से भी अधिक काले पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे हिंसक मौत मारे गए हैं ..."

उनकी सुरक्षा को इतना ख़तरा हुआ कि वे न्यू यॉर्क शहर के एक समाचार पत्र में काम करने चली गईं। वे अपना संदेश ब्रिटेन ले गईं जहाँ उन्होंने अटलांटिक महासागर के दोनों छोर पर एन्टी-लिंचिंग सोसायटी की स्थापना में मदद की। बाद में वे शिकागो में रहने गईं, जहाँ वकील फर्डीनैन्ड बारनैट ने उन्हें अपने अख़बार में लिखने का काम दिया। जल्द ही इन दोनों सक्रियकर्मियों ने विवाह किया। आइडा ने अपना नाम अब आइडा बी. वैल्स-बारनैट लिखना शुरू किया, जो उस ज़माने में अपनी स्वतंत्र पहचान दर्शाने का साहसिक कदम था। साथ ही उन्होंने अख़बार की ज़िम्मदारी भी ली।

जिम और लिज़ी की आइडा ने अपने उत्साह और तेज को कभी खोया नहीं। एक शिक्षाविद्, पत्रकार, सक्रियकर्मी और काली महिलाओं के मताधिकार समूह की संस्थापिका आइडा ने अपने जीवन के अंतिम तीस वर्ष अपने सपने को साकार करने में बिताए: उस सपने को जिसमें सभी अमरीकी बराबरी और न्याय के लिए साथ-साथ काम करेंगे।

जेन एडम्स

6 सितम्बर 1860
सेडविल, इलिनॉइस
22 मई 1935
शिकागो, इलिनॉइस

"भूखों को खिलाना और रोगियों की तीमारदारी करना स्वाभाविक है, छोटों को आनन्द और बुज़ुर्गों को आश्वासन देना और मनुष्य की सामाजिक आदान-प्रदान की गहरी इच्छा की पूर्ति करना भी स्वाभाविक है।"

अमरीका के बड़े शहर उन ग़रीबों से भरे पड़े थे जो दुनिया भर के ग्रामीण इलाकों से आए थे। अधिकतर धनवान लोग खुद से कहते थे कि ग़रीब हमेशा से रहे हैं और हमेशा रहेंगे। पर कुछ लोग मारले के भूत से तब सहमत होते जब वह अपनी जंज़ीरें खड़का, सर्द दिल वाले स्क्रूज़ से कहता है, "मानवता मेरा कारोबार (बिज़नैस) था।"

1800 के अंतिम दशकों में मानवता के इस कारोबार को 'सामाजिक कार्य' कहा जाने लगा था। यह उन लोगों के लिए अच्छा था जिन्हें मदद मिलती थी। और जैसा चार्ल्स डिकन्स की कथा *क्रिसमस कैरल* में स्क्रूज़ ने सीखा, यह मदद करने वालों के लिए भी अच्छा था। जेन एडम्स का जीवन तब नाटकीय रूप से बदला जब उन्होंने दूसरों की मदद करना तय किया।

बचपन से बिन माँ की जेन को उनके पिता ने पाला और बेदह प्यार दिया। जेन टेढ़ी पीठ वाली, "कुरूप लड़की थी, जिसके पैरों की उंगलियाँ अन्दर को मुड़ी हुईं थीं।" जिसकी आँखें उदास थीं, पर आदर्श ऊँचे थे। वे यह जान कर दुखी होती थीं कि वे ग़रीब किस कदर छोटे, तंग घरों में रहते हैं जिनके पिता उसके पिता की तरह सम्पन्न नहीं हैं। पर वह कर क्या सकती थी? जेन के ज़माने में सम्पन्न भद्र युवतियों के लिए अधिकतर पेशों के दरवाज़े बन्द थे। रॉकफोर्ड फीमेल सेमिनरी से अध्ययन पूरा करने के बाद जेन चिकित्सक बनने का अध्ययन करने लगीं। पर उनके स्वास्थ्य ने उन्हें इस कोशिश को त्यागने पर मजबूर किया। अंततः सर्जरी से उनकी रीढ़ की हड्डी तो ठीक हो गई, पर उनके दिल और दिमाग की बेचैनी बरकरार रही। वे उपयोगी कैसे बन सकती थीं?

जेन और उनकी मित्र एलन गेटस् को इस सवाल का जवाब तब मिला जब वे यूरोप की यात्रा पर निकलीं। लंदन की एक ग़रीब बस्ती में उन्हें टॉयनबी हाउस मिला, जो पहला "बस्ती गृह" था। वह एक सामुदायिक केन्द्र था जो ग़रीबों के जीवन को सुधारने के उद्देश्य से बनाया गया था।

जब वे घर लौटीं जेन और एलन ने शिकागो की एक खस्ताहाल हवेली में मानवता के कारोबार को शुरू किया। उन्होंने हल हाउस के दरवाज़े 18 सितम्बर 1889 में खोले। आगामी वर्षों में हज़ारों लोग वहाँ साक्षरता की कक्षाएं, नागरिकता कार्यक्रम और व्यावसायिक प्रशिक्षण पा सके। जेन एडम्स को अपने जीवन का सही उद्देश्य मिल गया था।

उन्होंने अन्य सामाजिक कार्य के अगुआओं के साथ मज़दूर यूनियन आरंभ किए, और सुरक्षित भोजन के लिए तथा गरीबों के भयानक आवासों और पागलखानों के विरुद्ध काम किया। उन्होंने पहली किशोर अदालत, बाल कल्याण, मज़दूरों के मुआवज़े, सार्वजनिक स्वास्थ्य और महिलाओं के मताधिकार के लिए अभियान चलाए। जेन ने कट्टरता और काले-गोरों के बीच पार्थक्य के संघर्ष में आइडा बी. वैल्स-बार्नेट का साथ दिया।
जब फ्लौरैंस कैली ने शोषण करने वाले, मज़दूरों के रिहाइशी कारखानों की स्थितियों में सुधार की मुहिम छेड़ी, जेन ने उनको समर्थन दिया। नतीजतन राज्य में बाल श्रम के विरुद्ध और आठ घंटे के कार्य दिवस संबंधी पहले कानून पारित हो सके।

जेन एडम्स ने सामाजिक कार्यों के लिए धन एकत्रित किया, किताबें लिखीं और प्रथम विश्व युद्ध के हज़ारों शरणार्थियों के लिए काम किया। 1920 में अपने नए पाए मताधिकार का जश्न, उन्होंने अमेरिकन सिविल लिबर्टीस् यूनियन के गठन में मदद कर मनाया। इसके ग्यारह वर्ष बाद विश्व ने उनके जीवन का जश्न तब मनाया जब उन्हें नोबेल शान्ति पुरस्कार से नवाज़ा गया। जेन एडम्स का मानवता का कारोबार आज भी देश भर के सामुदायिक केन्द्रों में जारी है।
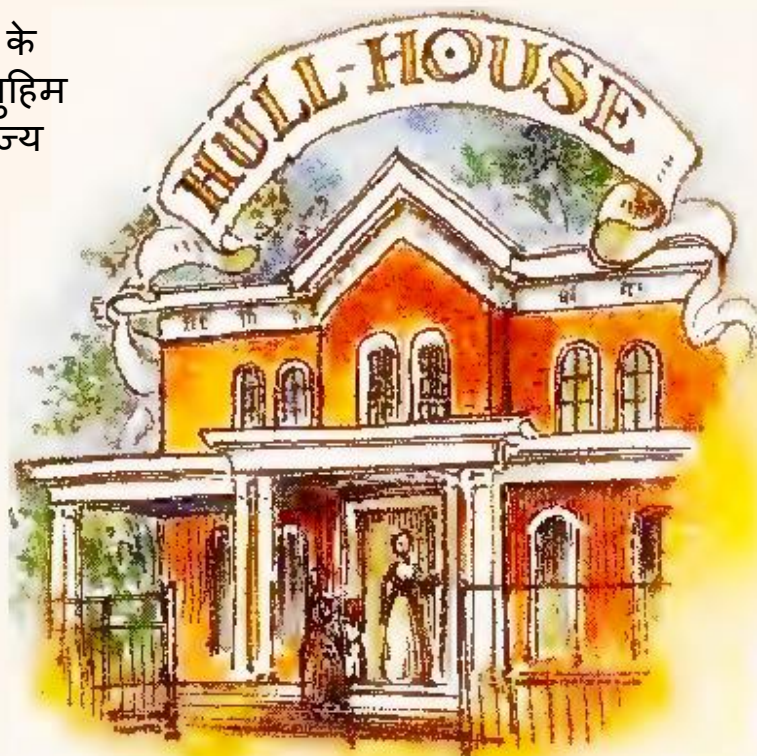
मेरी हैरिस जोन्स

1 मई 1830
कॉर्क, आयरलैण्ड
30 नवम्बर 1930
सिल्वर स्प्रिंग, मेरीलैण्ड

"अगर उन्हें मुझे फाँसी देनी है, तो दें,
पर जब मैं तख्ते पर चढ़ूंगी मैं चीखूंगी
'श्रमिक वर्ग को आज़ादी दो।"

मेरी हैरिस का जन्म एक ऐसे आयरिश परिवार में हुआ था जिसका इतिहास हंगामा खड़ा करने का रहा था। अमीर ज़मींदार जिस तरह आयरलैण्ड के ग़रीब किसानों से बरताव करते थे उसका विरोध मेरी के पिता ने किया था। फाँसी से बचने के लिए वे कनाडा भाग निकले। और तब अपने परिवार को भी बुलवा लिया। बड़ी हो कर मेरी पहले टोरान्टो में और तब मैम्फिस में शिक्षिका बनीं। वहाँ उनकी मुलाकात मृदुभाषी लोहा मज़दूर से हुई।

जॉर्ज जोन्स से विवाह करने के कुछ ही समय बाद गृहयुद्ध शुरू हो गया। युद्ध खत्म ही हुआ था कि एक बुखार की महामारी ने मेरी के पति और चारों छोटे बच्चों की जान ले ली। चार वर्ष बाद 1871 में शिकागो के विशाल अग्निकाण्ड में उनका सिलाई का धंधा स्वाहा हो गया। यह उस "मदर जोन्स" के जीवन का पहला भाग था, जो बाद में मज़दूर आन्दोलन की सबसे रंगीन नायिका बनीं।

19वीं शताब्दी के आरंभिक भाग में लखपति उद्योगपति अपना लाभ बढ़ाने के मकसद से मज़दूरों से घंटों काम करवाते, अक्सर बेहद ख़तरनाक परिस्थितियों में, और उन्हें कम से कम मज़दूरी देते। वे यह सब इसलिए कर पाते थे क्योंकि तब ढ़ेरों प्रवासी, आज़ाद किए गए गुलाम, बेहाल किसान और उन सबके बच्चे काम के लिए तरसते थे। इन शोषित-पीड़ित श्रमिकों को मेरी आवाज़ देना चाहतीं थीं। उनके पति अमरीका की पहली राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन (1859 में गठित, द आयरन मोल्डर्स यूनियन) के सदस्य रह चुके थे। युनियनें मज़दूरों को संगठित करती थीं, ताकि वे अपने मालिकों से मोल-भाव कर सकें। अगर मालिक बात नहीं मानते तो मज़दूर काम बन्द कर सकते थे। यह अंतिम उपाय (काम नहीं तो दाम नहीं, दाम नहीं तो खाना नहीं) हड़ताल कहलाता था।

1 मई 1886 को देश भर के तकरीबन 340,000 मज़दूरों ने काम बन्द कर दिया, ताकि वे तब प्रचलित काम के दस से सोलह घंटों के कार्य दिवस को आठ घंटों के कार्य दिवस में बदल सकें। मेरी ने मज़दूरों के साथ गायाः ''सूरज की धूप को महसूस करना चाहते हैं हम/चाहते हैं फूलों को सूंघना/ विश्वास है ईश्वर भी चाहता है यह/पाकर रहेंगे हम आठ घंटे।'' शायद तथाकथित ''जनता की सरकार'' उनके पक्ष में हो।

पर नहीं। सरकार बहरी बनी रही। जो कुछ बड़े उद्योगपतियों के हित में था, वह देश के भी हित में था। एक ख़तरनाक संघर्ष के लिए मंच तैयार था, जिसमें आम राय, संगीनें, प्रदर्शन, बॉयकॉट, आतंक और भूख सब शामिल थे। बड़ी कम्पनियों ने जासूसों, पहरेदारों की सेनाओं और गुण्डों की मदद से हड़तालों को तोड़ने की कोशिश की। और अक्सर हिंसा का जवाब खूनी हिंसा से दिया गया।

मेरी ने न्यू यॉर्क शहर के वस्त्र और स्ट्रीटकार कर्मियों को, मैसाच्यूसैटस् के कपड़ा मिलों के मज़दूरों को, पेन्सिलवेनिया के इस्पात मज़दूरों को और कई राज्यों के खदान मज़दूरों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कम्पनियों के पहरेदारों को ललकार कर कहा कि उनमें हिम्मत हो तो वे एक बूढ़ी औरत पर गोलियाँ दागें। वे खदान मज़दूरों को ''मेरे लड़के'' कहती थीं। और वे उन्हें ''मदर'' बुलाते थे।

मदर जोन्स ने अलबामा के कपड़ा मिलों मे काम किया ताकि वे अपनी आँखें से उन ''नन्हे, गंदे बच्चों'' को देख सकें, जिनमें कई तो छह साल की उम्र में करघों पर काम करते थे। 1903 में उन्होंने राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वैल्ट के ऑयस्टर बे, न्यू यॉर्क स्थित आवास तक बच्चों के एक जुलूस का नेतृत्व किया। पर उन्होंने मिलने तक से मना कर दिया। मदर जोन्स को एक बार से अधिक जेल में बन्द किया गया। कोलाराडो की एक खान कम्पनी ने 83 वर्षीय मदर जोन्स को 26 दिनों तक चूहों से भरे एक तहखाने में कैद रखा। उनके अधिकांश संघर्ष असफल रहे। हालांकि वे सौ वर्ष तक जीवित रहीं, मेरी जोन्स श्रम कानूनों को बदलते देख न सकीं। पर उनकी उम्मीद हमेशा बरकरार रहीः ''मज़दूरों का मुद्दा आगे बढ़ रहा है। भविष्य मज़दूरों के मज़बूत, खुरदुरे हाथों में है।''

श्रमिक आन्दोलन
ANUFACTURING CO.
STRIKE

कालक्रम

1820 का दशक - कुशल मज़दूरों ने अपना एक राजनीतिक दल बनाया जो अल्पकालिक रहा - वर्किंग मैन्स पार्टी। इन मज़दूरों ने दस घंटे के कार्य दिवस और कर्ज़दारों के कारावासों को खत्म करने की मांग की।

1834 - लोवेल, मैसाच्युसेटस की कपड़ा मिलों की 'मिल बालिकाओं' ने अपने भुगतानों से कटौतियों के विरोध में हड़ताल की।

1859 - फिलेडैल्फिया के विलियम एच. सिल्विस ने लोहे के साँचे बनाने वालों की राष्ट्रीय यूनियन की शुरुआत की।

1867 - औलिवर एच. कैली ने किसानों को पेटरन्स ऑफ हस्बैण्डरी उर्फ द ग्रेंज में संगठित किया।

1869 - फिलेडैल्फिया के वस्त्र कामगारों ने नोबल ऑर्डर ऑफ द नाइटस् ऑफ लेबर का गठन किया।

1877 - राष्ट्रपति हेयस् ने हड़ताल कर रहे रेलरोड मज़दूरों के विरुद्ध सेना भेजी।

1881 - सैम्युएल गोम्फर्स ने 250,000 मज़दूरों को संगठित कर अमेरिकन फैडरेशन ऑफ लेबर (एएफएल) बनाया।

4 मई 1866 - हेमार्केट चौक, शिकागो में आठ घंटों के कार्य दिवस की मांग करने वाले विशाल प्रदर्शन में एक बम के कारण पुलिसकर्मी और आम नागरिक मारे गए।

1890 का दशक - कार्नेगी स्टील कम्पनी और पुलमैन रेलरोड कारस् के विरुद्ध हड़ताल में अब तक की सबसे बुरी नियोक्ता-कर्मचारी हिंसा घटी।

1894 - मज़दूर दिवस एक राष्ट्रीय अवकाश बना।

25 मार्च 1911 - ट्राईएंगल शर्टवेस्ट कारखाने में लगी आग में 146 युवतियों ने अपनी जान गंवाई। इसके बाद जा कर सुरक्षित कारखानों से संबंधित कानून बने।

1933 - फ्रांसिस पर्किन्स श्रम सचिव बनीं। वे कैबिनेट की पहली महिला सदस्या थीं।

1935 - नैशनल लेबर रिलेशन्स कानून ने मज़दूरों के संगठित होने के अधिकार को मान्यता दी।

1838 - कांग्रेस ने न्यनतम मज़दूरी (25 सेंट प्रति घंटा) निर्धारित की और बाल-श्रम को गैर-कानूनी घोषित किया।

1947 - कांग्रेस ने टैफ्ट-हार्ली कानून पारित कर यूनियन की ताकत को नियंत्रित किया।

1955 - अमेरिकन फैडरेशन ऑफ लेबर, कांग्रेस ऑफ इन्डस्ट्रियल ऑर्गेनाइज़ेशन (असेम्बली लाइन के मज़दूर) से मिल गईः एएफल-सीआईओ का गठन हुआ।

1962 - सीज़र शावेज़ व डोलोरस हुएर्ता ने उस संगठन की स्थापना की जो बाद में युनाइटेड फार्म वर्कर्स बना।

1981 - राष्ट्रपति रीगन ने एयर ट्रैफिक कंट्रोलरों की हड़ताल को समाप्त किया जिससे उनकी यूनियन प्रभावी रूप से बिखर गई।

अक्तूबर 2000 - कैलिफोर्निया में द्वितीय विश्व युद्ध की महिला कार्मिकों को समर्पित राष्ट्रीय उद्यान बनाया गया।

मार्गरेट सैंगर

14 सितम्बर 1879
कॉरनिंग, न्यू यॉर्क
6 सितम्बर 1966
टस्कन, एरिज़ोना

"कोई ऐसी स्त्री खुद को स्वतंत्र नहीं कह सकती जिसका अपने शरीर पर स्वामित्व और नियंत्रण न हो।"

मार्गरेट हिगिन्स की माँ बीमार थीं। उन्होंने घर चलाने में पति की मदद करने की मंशा से कपड़ों की धुलाई का काम शुरू किया था। बाइस वर्षों में अठारह बार उन्हें पता चला कि वे गर्भवती हैं। उन अठारह में से सात बच्चों की मौत हो गई और वे हर गर्भ के साथ और कमज़ोर व बीमार होती गईं, और अंततः सिर्फ पचास वर्ष की उम्र में उनकी मौत हो गई। उनके ग्यारह बच्चे उन्हें कभी नहीं भूले, पर मार्गरेट को अपनी माँ के जीवन से सीखे पाठ खास तौर से याद रहे।

मार्गरेट नर्स बनने की पढ़ाई कर रही थीं जब वे विलियम सैंगर से प्रेम करने लगीं। उनकी पहली सन्तान, एक बेटा, होने के बाद वे टीबी की चपेट में आईं, इसी रोग ने उनकी माँ की भी जान ली थी। मार्गरेट रोग से उबरीं, उनके दो और बच्चे हुए। पर उनकी बेचैनी बढ़ने लगी। उन्हें अपने बच्चों की देखभाल के साथ न्यू यॉर्क शहर की बस्तियों में विज़िटिंग नर्स के रूप में काम करने के लिए काफ़ी जोड़-तोड़ बैठाना पड़ता था। वे अंधेरी सीढ़ियाँ चढ़, थकी आँखों वाली औरतों को उस दुनिया में बच्चा जनने में मदद करतीं, जिसमें कष्ट, ग़रीबी, गंदगी और रोग था। जूते में रहने वाली बुढ़िया की ही तरह उन स्त्रियों के इतने बच्चे थे कि उन्हें यह सूझता ही नहीं था कि वे करें तो क्या करें।

महिलाओं के इस कष्ट ने मार्गरेट को एक क्रांतिकारी समाज सुधारक बना डाला। वह लड़की "हमेशा के लिए गायब हो चुकी थी," जिससे मिस्टर सैंगर ने शादी की थी। मार्गरेट सैंगर के सामने एक ज्वलन्त मुद्‌दा थाः काश हर स्त्री गर्भवती बनने को नियंत्रित कर सकती। 1914 तक वे "बर्थ कंट्रोल" (गर्भ नियंत्रण) के विषय पर अपनी ही पत्रिका में लिखने लगीं। जब उन्होंने *द वुमन रिबेल* की प्रतियाँ भेजीं तो उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ा। क्योंकि अमरीका की डाक में गर्भ निरोध का ज़िक्र करना भी एक संघीय अपराध था और 1936 तक रहा। कई अमरीकी इस विषय को वर्जित और ज़ाहिर तौर पर अनैतिक व पाप मानते थे। मार्गरेट की गिरफ्तारी हुई और उनकी सबसे छोटी सन्तान, एक बेटी की मौत हो गई। मार्गरेट बहुत दुखी हुईं, पर उन्होंने अपने वे प्रयास जारी रखे, जो उनकी अन्य बेटियों का भविष्य सुधारने वाला था।

16 अक्तूबर 1916 को ब्रुकलिन, न्यू यॉर्क में सैंगर ने चर्च, सामाजिक परिपाटी और देश के कानून के विरोध के बावजूद अमरीका का पहला 'गर्भ नियंत्रण' क्लिनिक खोला। पुलिस के आने और छटपटाती, चिल्लाती मार्गरेट को जेल ले जाने के पहले के दस दिनों में 150 महिलाएं क्लिनिक में यह सीखने आईं कि गर्भ नियंत्रण का उपयोग कैसे किया जाए। ज़ाहिर है मार्गरेट पर मुकदमा चला और उन्हें 30 दिनों की कैद की सज़ा सुनाई गई।

मार्गरेट लगातार संघर्ष करती रहीं कि चिकित्सकों द्‌वारा गर्भ नियंत्रण की जानकारी देने को कानूनी बनाया जाए। उन्होंने विश्व भर में आबादी को नियंत्रित करने का समर्थन किया, उनकी संस्था बाद में प्लैन्ड पेरेंटहुड फैडरेशन बनी। इस संस्था ने उन चिकित्सकों को वित्त उपलब्ध करवाया, जिन्होंने आगे चल कर गर्भ निरोधक 'पिल्स' (गोलियाँ) ईजाद कीं। मार्गरेट का मुद्‌दा वास्तव में एक ऐसी सामाजिक क्रान्ति था जो उनकी माँ को भौंचक्का कर देता।

एलिस पॉल

11 जनवरी 1885
मूर्सटाउन, न्यू जर्सी
9 जुलाई 1977
मूर्सटाउन, न्यू जर्सी

"जब आप हल को हाथ लगाते हैं तो उसे रेखा के अन्त तक ले जाने के पहले छोड़ नहीं सकते।"

सेनेका फ़ॉल्स, न्यू यॉर्क में पहले महिला मताधिकार सम्मेलन के चालीस वर्ष बाद एलिस पॉल का जन्म हुआ था। न तो सूज़न बी. एन्थनी, ना ही एलिज़ाबैथ केडी स्टैन्टन कानूनन मत डालने के लिए ज़िन्दा रही थीं। मताधिकार पाने के उनके संघर्ष को स्त्रियों की एक नई पीढ़ी ने जारी रखा था। उनमें सबसे एकनिष्ठ योद्धा थीं करिश्माई एलिस पॉल।

उन्होंने 1905 में पेन्सिलवेनिया के स्वार्थमोर कॉलेज से स्नातक किया और तब छह अन्य संस्थाओं से डिप्लोमा लिए। ज्ञान की भूखी एलिस ने अर्थशास्त्र, सामाजिक कार्य का अध्ययन किया और 1928 तक कानून की तीन डिग्रियाँ भी पाईं। वे इंग्लैण्ड गईं और अध्ययन से कुछ समय अवकाश ले, वहाँ तीन महान मताधिकार कर्मियों के साथ काम कियाः एमोलाइन पैंकहर्स्ट, और उनकी बेटियाँ सिल्विया व क्रिस्टाबेल।

संसद के ऊबे हुए, महिलाओं का तिरस्कार करने वाले कानून निर्माताओं से गुहार करने के बदले इंग्लैण्ड की इन महिलाओं ने शानदार प्रदर्शन और खिड़िकियाँ तोड़ने वाले विरोध आयोजित किए। उन्हें कई बार गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। जहाँ उन्होंने भूख हड़तालें कीं। जेल के पहरेदार उन्हें बांध कर पटकते और नाक की नली के सहारे जबरन खिलाते। एलिस ने उनसे जो कुछ सीखा था उसे साथ ले वे घर लौटीं ताकि नारी संघर्ष को जारी रख सकें। वे वॉशिंगटन डी.सी. में रहने लगीं।

तीन महीने बाद, 3 मार्च 1913 को, वुडरो विल्सन अपने उद्‌घाटन जुलूस को देखते, उसके एक दिन पहले, एलिस ने अपना जुलूस आयोजित किया। 8,000 स्त्रियाँ व्हाइट हाउस के सामने से निकलीं। एलिस पॉल और उनके अनुयायी नैशनल वुमनस् पार्टी (एनडब्ल्यूपी) में संगठित हो चुके थे। उन्होंने भूख हड़तालें आयोजित कीं, होलिकाएं जलाईं, जन-प्रदर्शन किए। दिनोंदिन वे मूक प्रहरी बन व्हाइट हाउस की लोहे की बाड़ के सामने खड़ी होतीं। उनके हाथों की तख्तियाँ ऐसे सवाल पूछतीं: ‘‘राष्ट्रपति महोदय, महिलाओं को आज़ादी के लिए कब तक इन्ज़ार करना पड़ेगा?’’

एक आज़ाद देश में एलिस व उनके अन्य आन्दोलनकर्ता, पैन्सिलवेनिया एवैन्यू पैदल पथ पर ‘‘बाधा उत्पन्न करने के नाम पर बार-बार गिरफ्तार किए जाते रहे। हालांकि जेल में उन्हें पीटा और अपमानित किया जाता रहा। एलिस जबरन खिलाए जाने से अशक्त होने के बाावजूद जुटी रहीं। अधिक नरम नज़रिए वाली नैशनल अमेरिकन वुमन सफरेज एसोसिएशन की दसियों हज़ार महिलाएं भी तब तक लगी रहीं, जब तक कांग्रेस ने अंततः 19वें संशोधन को पारित न कर दिया। क्या यह जीत थी? हाँ और नहीं।

छत्तीस राज्यों (कुल अड़तालिस के तीन चैथाई) को प्रस्ताव से सहमत होना बाकी था। एक के बाद एक राज्य की महिला मताधिकारकर्मी अपने विधायकों का पीछा करतीं, उनसे अपनी बात मनवातीं और उनके सूटों पर पीले फूल लगातीं, जो उनके अभियान का प्रतीक था। हरेक राज्य में जीत हासिल करने के बाद एलिस पॉल झंडे पर एक सितारा काढ़तीं। 18 अगस्त 1920 को, यानी एलिज़ाबैथ स्टैन्टन द्‌वारा महिलाओं के ‘‘निर्वाचन के आधारभूत अधिकार’’ की घोषणा के 72 वर्ष बाद, सितारों से सजा एक झंडा वुमनस् पार्टी की बालकनी से लटका। टेनेसी में संकीर्ण वोटों से पाई विजय ने अंततः महिलाओं को मत देने का अधिकार हमेशा के लिए दे दिया।

मिस पॉल के दिमाग में देश के कानून में एक और संशोधन थाः समान अधिकार संशोधन, जो महिलाओं के साथ भेदभाव को गैर-कानूनी बनाता। उन्होंने 1921 में समान अधिकार संशोधन के शब्द लिखे, और तब अपने शेष लम्बे जीवन भर वे दुनिया भर में महिलाओं के साथ समान व्यवहार के लिए संघर्ष करती रहीं।

AUGUST 18, 1920
WOMAN SUFFRAGE
SUFFRAGE
FOR

“महिलाओं अपने मत का प्रयोग करो”

11 अक्तूबर 1884
न्यू यॉर्क सिटी
7 नवम्बर 1962
न्यू यॉर्क सिटी

"आप हर उस अनुभव से साहस और आत्मविश्वास पाते हैं, जिसमें आपको भय का सामना करना पड़ता है ... आपको वह करना ही होगा जिसे आप सोचते हैं कि आप कर ही नहीं सकते।"

जेन एडम्स की ही तरह एलिनोर भी खुद को एक "बदसूरत बच्ची" मानती थीं। जब वे छोटी ही थीं उनकी सर्द दिल माँ और शराबी पिता की मृत्यु हो गई। सो वे उन लोगों के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकती थीं जिन्हें दूर कर पीछे छोड़ दिया गया हो। पर किस्मत और परिवार की राजनीति के प्रति रुचि ने उन्हें सार्वजनिक सुर्खियों में रखा। उनके चाचा थियोडोर रूज़वेल्ट उस वक्त राष्ट्रपति थे जब एलिनोर ने अपने दूर के रिश्तेदार फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट से विवाह किया। 4 मार्च 1933 में फ्रैंकलिन राष्ट्रपति बने और एलिनोर प्रथम महिला। जीवन ने उन्हें छह बच्चों का माता-पिता बनाया। वे दोनों शायद हमेशा सुख से नहीं जिए, पर वे निश्चित रूप से 20वीं शताब्दी के सबसे शक्तिशाली व विवादास्पद 'राजनीतिक टीम' थे।

जब 1921 में फ्रैंकलिन पोलियो से अपंग हुए, लगा कि उनका राजनीतिक जीवन समाप्त हो जाएगा। इधर फ्रैंकलिन पीड़ा और अनिश्चितता का सामना कर रहे थे, तो उधर एलिनोर तकलीफदेह आत्मशंका और उन्हें नापसंद करने वाली अपनी सास से जूझने के बावजूद डैमोक्रैटिक पार्टी के लिए काम करती रहीं। वे भयभीत थीं पर जुटी रहीं। और यह सब करते हुए उन्हें वे खज़ाने मिले जिनके अस्तित्व का उन्हें इल्म ही न थाः ऊर्जा और फ़ौलादी इच्छाशक्ति।

उन्होंने लेखन, शिक्षण और प्रबंधन करने के कौशलों को विकसित किया। उन्होंने अपनी बुलन्द आवाज़ में भाषण दिए, न्यू यॉर्क में एक स्कूल चलाने में मदद की और उन लोगों के जीवन बेहतर बनाने के काम किया जो एलिनोर की तरह सम्पन्न परिवारों में पैदा नहीं हुए थे। जब 1928 में फ्रैंकलिन रूज़वैल्ट न्यू यॉर्क के गवर्नर बने, एलिनोर की अपनी स्वतंत्र सार्वजनिक हस्ती थी। 1933 से 1945 तक आशावादी राष्ट्रपति 'एफडीआर' ने हर चन्द कोशिश की ताकि वे एक मुश्किल दौर से अमरीका को बढ़ा ले जाएं। एलिनोर नियमित रूप से प्रेस सम्मेलन करती रहीं और अनेक सामाजिक मुद्दों पर एक दैनिक अख़बार में स्तंभ लिखती रहीं।

उन्होंने नस्ली अन्याय से लड़ने में मेरी मैकलिऑड बैथ्यून जैसी हस्तियों के साथ काम किया। जब महान अफ्रीकी-अमरीकी गायिका मेरिएन एन्डरसन ने लिंकल मेमोरियल में अपनी विख्यात संगीत सभा की, उसे एलिनोर ने ही संभव बनाया था। वे व्हील-चेयर से बंधे अपने पति की 'आँखें व कान'' थीं। वे दुनिया भर में घूमीं और अमरीकियों से मिलीं, इनमें अमरीकी सैनिक भी शामिल थे। उन्होंने प्रथम महिला की भूमिका को बदला और उसे विस्तार दिया। पर 1945 में एफडीआर की मृत्यु व अणु बम विस्फोट ने उनकी दुनिया हमेशा के लिए बदल डाली।

द्वितीय विश्व युद्ध की राख से संयुक्त राष्ट्र संघ उभरा। यह नवगठित संगठन विश्व शान्ति को समर्पित था। एलिनोर रूज़वैल्ट ने 1952 तक राष्ट्रसंघ में अपने देश का तीन बार प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने राष्ट्रसंघ के मानव अधिकारों के घोषणा पत्र को लिखने में मदद की, जो ''सभी देशों के सभी लोगों के लिए'' था। एलिनोर ने राष्ट्रसंघ में पद तो छोड़ा (राष्ट्रपति कैनेडी ने उन्हें अमरीका के प्रतिनिधि मंडल में 1961 में फिर से नियुक्त किया था) पर वे उसके काम को आगे बढ़ाने के लिए लिखती, बोलती और यात्राएं करती रहीं। उन्होंने डेमोक्रैटिक पार्टी के लिए प्रचार किया और कई किताबें लिखीं। एक समय की वह शर्मीली दुलहन एक सम्मानित व प्रतिष्ठित मानवतावादी व कूटनीतिज्ञ बन चुकी थीः पहले की वह बेचैन एलिनोर रूज़वैल्ट अब विश्व नागरिक थी।
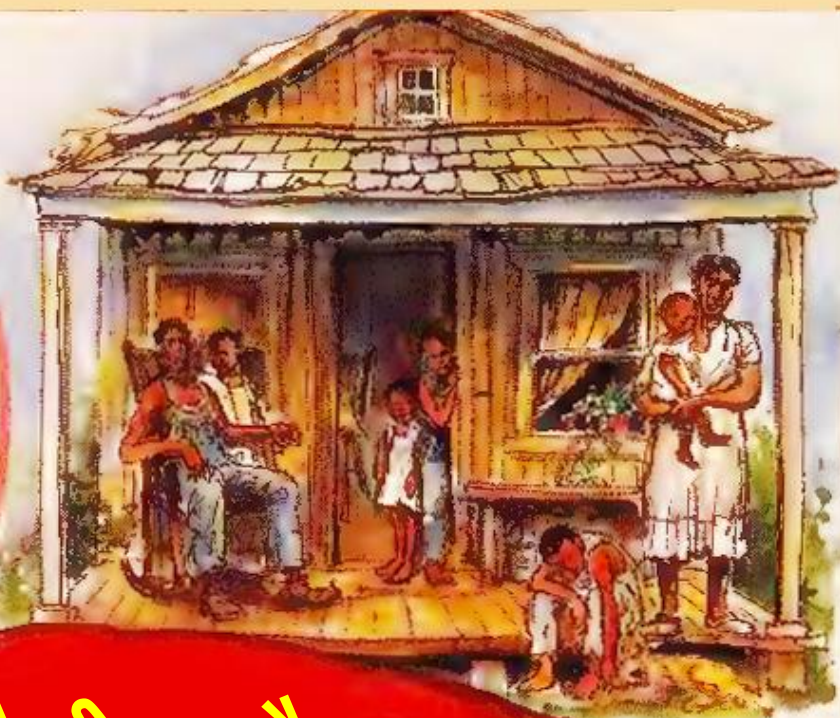
फैनी लू हैमर

6 अक्तूबर 1917
मौंटेगोमरी काउंटी, मिसिसिपी
14 मार्च 1977
माउंट बेयू, मिसिसिपी

"मैं रोगी और थकी-हारी होने से बीमार और थक चुकी हूँ।"

टाउन्सएण्ड परिवार में एक और नया शिशु आ चुका था। जिम व लू एला के चौदह बेटों और पाँच बेटियों की एक और बहन फैनी लू पैदा हुई थी। टाउन्सएण्ड दम्पति मिसिसिपी के 'डर्ट फार्मर्स' (अनुपजाऊ ज़मीन में खेती कर गुज़र-बसर करने वाले किसान) थे। वे बंटाईदार थे, जो बीज ख़रीदते, खरपतवार निकालते, खेती की देखभाल करते, फसल काटते और तब फसल का आधा हिस्सा उस व्यक्ति को देते जो दरअसल ज़मीन का मालिक था। फैनी लू ने बड़े होने पर कहा, "जीवन कठिन से भी बदतर था। वह भीषण था। हमारे पास खाने को कभी पर्याप्त नहीं होता था।"

जब दूसरे बच्चों ने स्कूल जाना शुरू किया फैनी लू कपास चुनने में मदद किया करती थी। अन्य ग़रीब ग्रामीण बच्चों की तरह टाउन्सएण्ड बच्चे भी सर्दियों में स्कूल जाते थे, फसल कट जाने के बाद। तब मार्च में बुआई के समय फिर से स्कूल जाना बन्द कर देते। फैनी लू के लिए, जिसे शिक्षा पाने की ललक थी, यह तरीका मुश्किल था।

उसका परिवार कड़ी मेहनत और बचत करता। धीरे-धीरे उन्होंने कुछ तरक्की की। अंततः परिवार के पास तीन खच्चर और दो गायें जुटीं। पर पड़ौसी गोरे किसान ने उनके पशुओं को ज़हर दे दिया, ताकि वे दुनिया में बहुत आगे न बढ़ जाएं। यह सब और तमाम दूसरी बातें भी फैनी लू की स्मृति में बसी थीं। फैनी लू ने पैरी ''पैप'' हैमर से विवाह उस दौरान किया जब अमरीका द्वितीय विश्व युद्ध लड़ रहा था। उन्होंने चार बेटियों को गोद लिया और उन्हें पाला-पोसा। उस वक्त जब वे रूलविले, मिसिसिपी के पास एक खेत में जी तोड़ मेहनत कर रहे थे।

युद्ध खत्म होने के बाद, काले अमरीकियों के सामने एक लम्बा संघर्ष था - नागरिकों के रूप में अपने अधिकारों को हासिल करने का। अगस्त 1962 में फैनी लू ने अपने चर्च की बैठक में नागरिकों के रूप में मत देने के अधिकार के बारे में सुना। फैनी और उनकी सखियाँ जानती थीं कि इस राह पर चलना आसान न होगा। अनेक कट्टरपंथी गोरे स्थितियों को पहले-सा बनाए रखना चाहते थे, गुलामों को आज़ादी मिली उसके पहले जैसा। वे उन कालों को आतंकित करते थे जो ''लीक से हटने'' की जुर्रत करते। वे उन्हें धमकाते, और हर किस्म का बुरा सुलूक करते। मत देने के लिए पंजीकरण करवाना दरअसल जान का ख़तरा मोल लेना था।

फैनी को अब तक यह पता ही नहीं था कि वह भी वोट दे सकती है। पर अब जब पता चल गया था, उसे कोई रोक भी नहीं सकता था। उसने सोचा या तो वह तेज़ी से मार डाली जाएगी या फिर तिल-तिल कर मरेगी, जैसे वह अब तक अपनी ज़िन्दगी में मरती आई थी।

काउन्टी की अदालत तक बस से सफ़र करने के बाद फैनी लू और उनके पड़ौसियों ने मताधिकार पाने में तमाम उन बाधाओं का सामना किया जो दक्षिण में कालों के सामने खड़ी की जाती थीं: जानबूझ कर कठिन बनाई गई परीक्षा, परीक्षा पोल टैक्स (मत देने के अधिकार से जुड़ी वह राशि जो सभी वयस्कों से वसूली जाती थी) जो कालों के बूते का नहीं था। फैनी लू काम करती रहीं, पढ़ती रहीं और महीनों बचत करती रहीं। अपने इन प्रयासों के चलते उन पर गोली चलाई गई, उनका और उनके पति का काम छिना और उन्हें बाहर निकाल दिया गया। इस सब ने फैनी लू को एक दृढ़ सक्रियकर्मी बना डाला, जिसका संकल्प अधिक से अधिक काले नागरिकों को पंजीकृत करवा मतदाताओं में शामिल करने का था।

वे प्रदर्शन बैठकों में, धरनों में, और जेल में डाली जाने पर भी बोलीं। उन्होंने अपनी आवाज़ उठाई ताकि वे दूसरों को शान्त कर सकें। उनका हौसला बनाए रख सकें। मिसिसिपी में अपनी गिरफ्तारी और नृशंस पिटाई के बावजूद वे कानून बदलने और ग़रीबों के जीवन को सुधारने के लिए काम करती रहीं। 1964 में उन्होंने कांग्रेस के लिए चुनाव लड़ा। 1965 में वोटिंग राइटस् एक्ट (मताधिकार कानून) को पारित होते देखा, जिससे वे नस्ली बाधाएं दूर हुई जिनका उन्हें सामना करना पड़ा था। उन्होंने डैमोक्रैटिक नैशनल सम्मेलन को 1964 और फिर से 1968 में संबोधित किया। यह सब, और भी बहुत कुछ उनकी स्मृति में दर्ज था, जब 1977 में उनकी मृत्यु हुई। उनके और नागरिक अधिकार आन्दोलन के उन जैसे अन्य शान्तिप्रिय योद्धाओं के कारण अमरीका बदल सका।
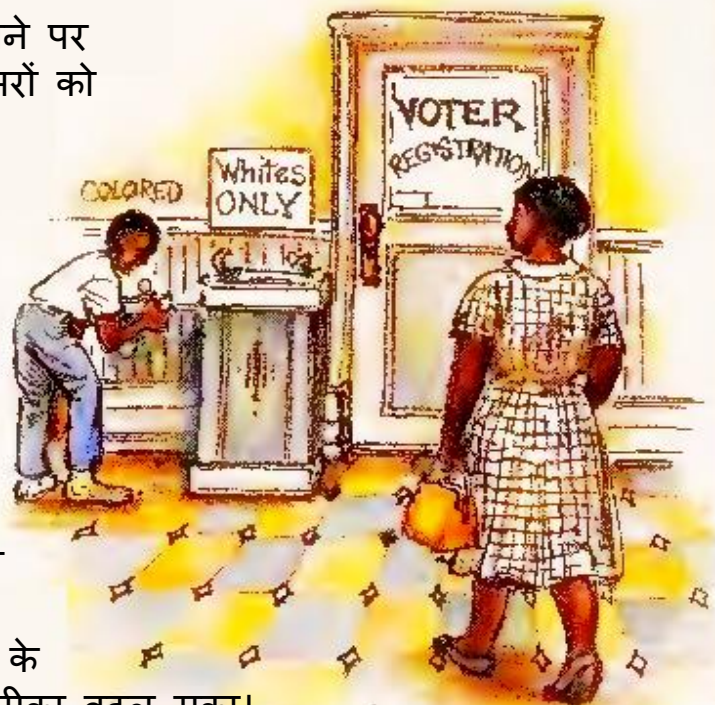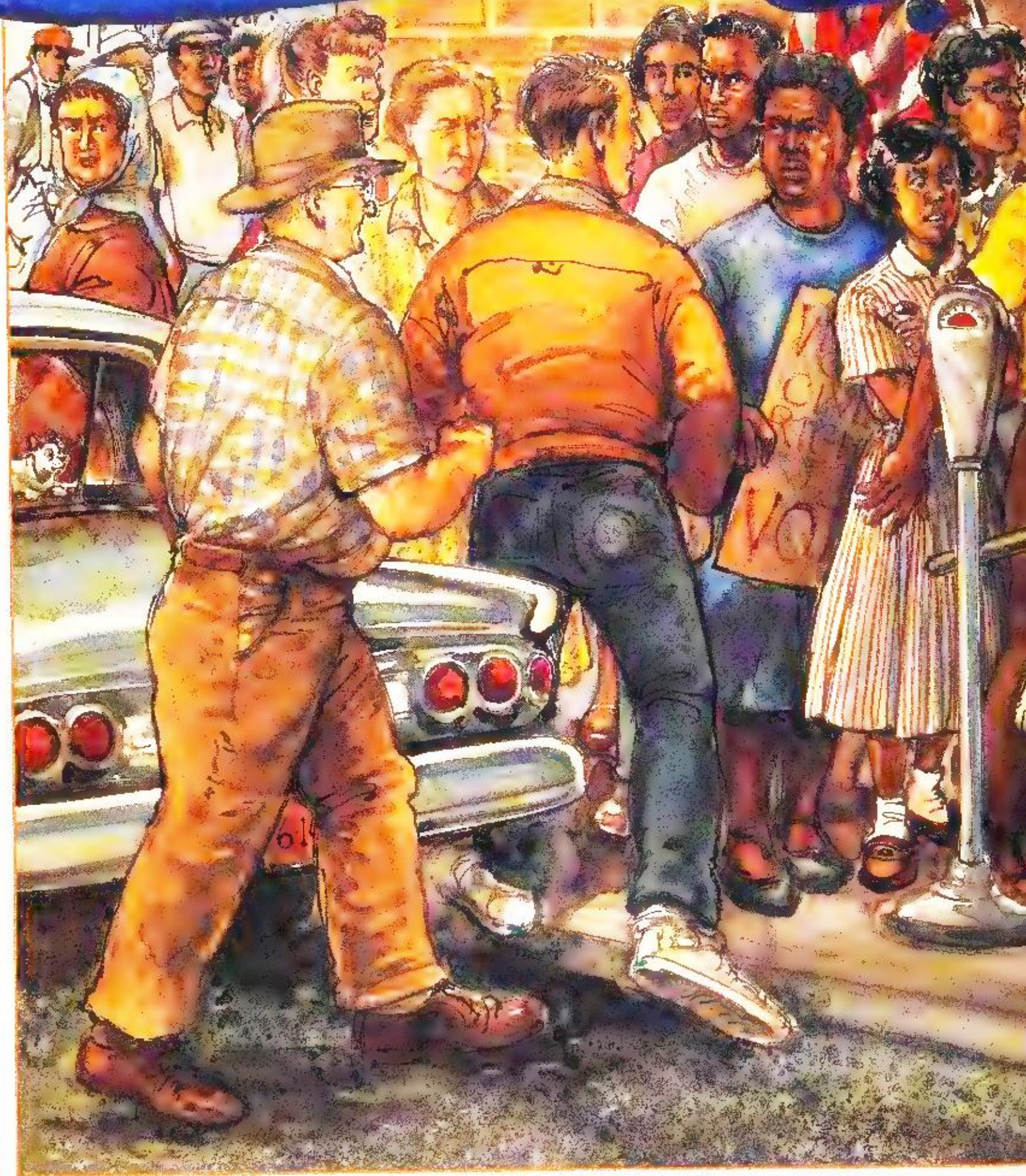
नागरिक अधिकार आन्दोलन

कालक्रम

मई 1954 - संयुक्त राज्य अमरीका की सर्वोच्च अदालत ने ब्राउन बनाम बोर्ड ऑफ एज्युकेशन, टोपेका, कैनसास मामले में फैसला सुनाया कि सार्वजनिक स्कूलों में नस्ली एकीकरण को सुविचारित गति के साथ शुरू किया जाना चाहिए।

5 दिम्बर 1955 से 20 दिसम्बर 1956 - मोंटगोमरी, अलाबामा में बस बहिष्कार। रोज़ा पार्क नागरिक अधिकार आन्दोलन की तब प्रतीक बनीं, जब उन्होंने गोरी सवारी के लिए अपनी सीट छोड़ कर बस के पिछले हिस्से में जाने से इन्कार किया।

सितम्बर 1957 - राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइज़नहावर ने अमरीकी हवाई सेना की 101वीं पलटन को लिटिल रॉक, आर्केनसास भेजा, ताकि नौ काले छात्रों को लिटिल रॉक सेंट्रल हाई स्कूल में पढ़ने दिया जा सके।

सितम्बर 1958 - लिटिल रॉक के सार्वजनिक स्कूल बन्द हो गए, क्योंकि आर्केनसास के गवर्नर ऑरेविल फाउबस् उन्हें सिर्फ गोरों के लिए बनाए रखना चाहते थे। ये स्कूल अंततः 1959 में फिर से खुले।

1960 - काले और गोरे छात्रों ने मिलकर स्टूडेंट नॉनवायलेंट कोआर्डिनेटिंग कमिटी (एसएनसीसी) का गठन किया ताकि अफ्रीकी-अमरीकी मताधिकार का उपयोग कर सकें।

1 फरवरी 1960 - **ग्रीनस्बरो**, नॉर्थ करोलाइना में छात्रों ने खाने के काउंटरों पर धरना दिया। इसी तरह के **विरोध** अन्य स्थानों मे भी हुए।

4 मई 1961 - फ्रीडम राइडर्स ने खतरनाक अंतर्राज्यीय बसों में यह सुनिश्चित करने के लिए यात्राएं कीं ताकि परिवहन में एकीकरण लागू किया जा सके।

29 सितम्बर 1962 - संघीय सेना मिसिसिपी विश्वविद्यालय को एकीकृत करने में मदद करने भेजी गई।

अप्रेल-मई 1963 - पुरुषों, महिलाओं और बच्चों ने अलगाववाद के विरुद्ध प्रदर्शन किए, जुलूस निकाला। उनका हिंसक विरोध हुआ।

28 अगस्त 1963 - 250,000 लोगों ने वॉशिंगटन डी.सी. में जुलूस निकाला। डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने अपना विख्यात व्याख्यान दियाः "मेरा एक सपना है ..."

15 सितम्बर 1963 - बर्मिनघंम, अलाबामा के चर्च में बमबारी से चार छोटी लड़कियों की मौत हुई।

21 जून 1964 - मिसिसिपीः तीन नौजवानों की हत्या कर दी गई। वे काले मतदाताओं का पंजीकरण कर रहे थे।

21 जुलाई 1964 -नागरिक अधिकार कानून पारित किया गया।

जनवरी - मार्च 1965 – सेलमा, अलाबामा में मत डालने के समान अधिकार के लिए प्रदर्शन किए गए। मार्टिन लूथर किंग, जूनियर और 30,000 लोग सेलमा से मोंटेगामरी तक जुलूस में पैदल चले।

6 अगस्त 1965 - मताधिकार कानून पारित हुआ।

4 फरवरी 1921
पेओरिया, इलिनॉइस
4 फरवरी 2006
वॉशिंगटन डी.सी.

"हमने अपनी एकजुटता की ताकत सीखी, अपने बहनापे की ताकत को जाना।"

1775 में एबिगेल एडम्स ने कॉन्टिनैन्टल कांग्रेस में हिस्सेदारी करने गए अपने पति को एक पत्र में लिखाः "नई कानून संहिता में ... जिसे बनाने की ज़रूरत तुम्हें होगी, मैं चाहती हूँ कि तुम स्त्रियों को याद रखो ... अगर महिलाओं पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता, तो हम विद्रोह करने को संकल्पित हैं...। इसके तकरीबन दो सौ वर्षों बाद 26 अगस्त 1970 को हज़ारों महिलाओं ने अमरीका के शहरों में "समानता के लिए कूच" में हिस्सा लिया। उन्होंने एबिगेल और एक अन्य क्रान्तिकारी महिला बैटी फ्रीडन के विचारों को दिल में उतार लिया था।

1920 में मत देने का अधिकार पाने के बाद महिलाओं ने तरक्की की थी। 1920 और 1930 के दशक में ज़्यादा से ज़्यादा महिलाएं कॉलेज में शिक्षा पाने लगी थीं, और उन्होंने पेशे अपनाना शुरू कर दिया था। 1940 के दशक में लाखों महिलाओं ने द्वितीय विश्व युद्ध जीतने में मदद की थी। उन्होंने कारखानों और व्यापारों को तब भी जारी रखा था, जब पुरुष लाम पर तैनात थे। पर जब पुरुष घर लौटे महिलाओं को साफ संदेश दिया गयाः "घर जाओ!"

1950 के दशक में भी ऊँचे वेतन और पदों वाली नौकरियाँ केवल पुरुषों के लिए आरक्षित थीं। औरतों से उम्मीद रखी जाती थी कि वे प्रसन्न गृहणियाँ और अच्छी माताएं बनेंगी, जो अपने पतियों के काम को समर्थन देती हों। ख़बरनवीस बैटी फ्रीडन ने औरतें जो महसूस करती थीं, उसे शब्द दिएः वे अपने परिवारों-घरों से प्रेम करती हैं, पर फिर भी ... उनमें से कईयों को लगता है कि उनके सपने मिट्टी में मिल रहे हैं।

बैटी फ्रीडन की किताब *द फैमिनिन मिस्टीक* (1963) तब भी विवादास्पद थी और आज भी है। बैटी ने लिखा था कि स्त्रियों को भी निजी लक्ष्यों की और उनके मस्तिष्क को चुनौतीपूर्ण काम की ज़रूरत है। यह भी कि माता-पिता को परिवार के घरेलू काम मिल-बांट कर करने चाहिए।

मिज़ फ्रीडन (मिस या मिसेज़ के बदले, जो महिला की वैवाहिक स्थिति को दर्शाते हैं) ने 1966 में नैशनल ऑर्गेनाइज़ेशन फॉर विमेन (एनओडब्ल्यू या नाउ) आरंभ किया। बाद में 1971 में उन्होंने ग्लोरिया स्टाइनहैम, शर्ली चिसहोम तथा फैनी लू होमर के साथ नैशनल वुमनस् पोलिटिकल कॉकस आयोजित किया ताकि अधिक महिलाओं को राजनीतिक पदों पर चुना जा सके। 1923 में एलिस पॉल ने जो कानून लिखा था उसे पारित करवाने के लिए नारीवादियों को लम्बा संघर्ष करना पड़ा। समान अधिकार का संशोधन कहता हैः "कानून के तहत अधिकारों की समानता को लिंग के आधार पर नकारा नहीं जा सकता।" सिनेट ने इसे 1972 में पारित किया था, पर अब तक इसकी पुष्टि नहीं हो सकी है।

महिला मुक्ति आन्दोलन में अनेक सशक्त प्रदर्शन हुए। विवाह, खेल-कूद में लड़कियाँ, गिरजों में महिला पादरी, समान काम के लिए समान भुगतान तथा मातृत्व के काम, पर गरमा-गरम बहसें हुईं। आज जब स्त्रियाँ अपने क्रेडिट कार्ड का उपयोग करती हैं, अपने बिलों का भुगतान अपनी कमाई से करती हैं, जब वे टीवी न्यूज़ एंकर, जेट पायलट, अग्निशमन कर्मी या सिनेटरों की तरह काम करती हैं, तो उन्हें उन नारिवादियों को शुक्रिया कहना चाहिए जिन्हें उनके विरोधी "ब्रा बर्नर्स्" या "लिबर्स्" कहते थे।

आज़ादी के सपने को साकार करने के लिए नागरिक अधिकार आन्दोलन की ज़रूरत पड़ी थी। बैटी फ्रीडन द्वारा आरंभ किए गए महिला मुक्ति आन्दोलन की ज़रूरत इसलिए पड़ी ताकि महिला मताधिकार कर्मियों का सपना साकार हो सके। बीसवीं शताब्दी के "महिलाओं के विद्रोह" पर एबिगेल एडम्स की क्या प्रतिक्रिया होती, उसका तो हम बस सपना ही देख सकते हैं।
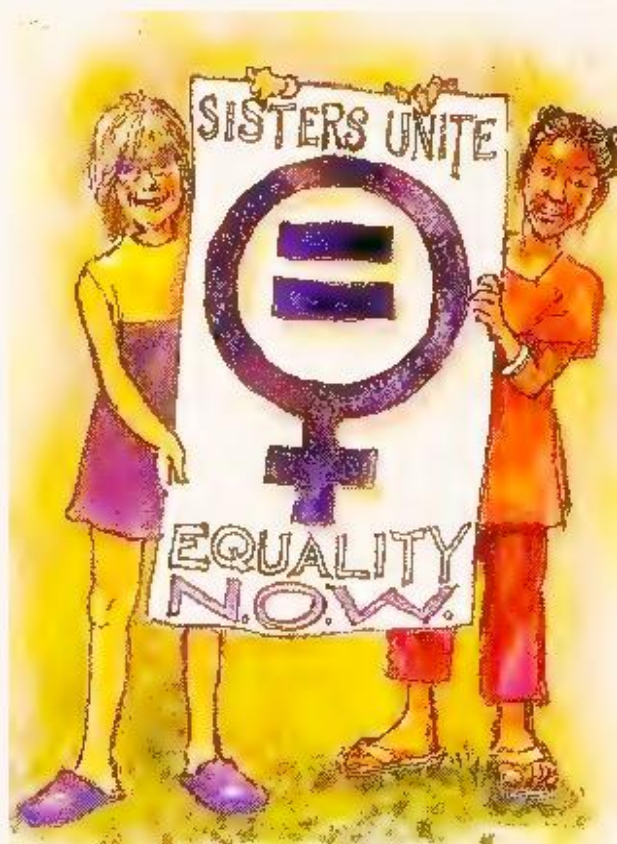
डोलोरस हुएर्ता

10 अप्रेल 1930
डॉसन, न्यू मैक्सिको

"मुझे लगता है कि विरोध के एक अहिंसक तरीके रूप में बहिष्कार के विचार को हम दुनिया में लाए।"

किसी दुकान में उम्दा रोशनी के बीच ताज़े फलों-सब्ज़ियों की कतारों की कल्पना करें। हरे और लाल अंगूरों की ठण्डी ढ़ेरियों की, नाज़ुक टमाटरों, पत्तेदार लैटिस, और गुलाबी आड़ुओं की कल्पना करें। किसी ने उन्हें पेड़ों/लताओं से तोड़ा होगा। चिलचिलाती धूप में कोई झुका होगा, पेड़ पर चढ़ा होगा और फल तक पहुँच उसे तोड़ा होगा। फल-बागानों के ये प्रवासी मज़दूर जिस मौसम में जो फल पलते-बढ़ते और पकते उनका पीछा करते, और एक के बाद दूसरे खेतों, अंगूरों और फलों के बागों में जाते। उन्हें वहाँ ख़तरनाक कीटनाशकों का छिड़काव करना पड़ता। कई सालों तक गर्मियों में इस कठिन और ज़हरीले काम के लिए प्रवासी खेत-मज़दूरों और उनके परिवारों को अमूमन बहुत ही कम भुगतान दिया जाता था।

1930 के मुश्किल दशक में मैक्सिको की सरहद पार कर अनेक ग़रीब अमरीका के उपजाऊ दक्षिण-पश्चिमी राज्यों में आए। उनमें से कुछ जो कैलिफोर्निया की सान हुआन वैली में आए, उन्हें डोलोरस हुएर्ता की माँ द्वारा चलाए जाने वाले स्टॉकटन होटल में निःशुल्क ठहरने की व्यवस्था मिली होगी। जब डोलोरस बड़ी होकर शिक्षिका बनीं, उन्होंने इन खेत-मज़दूरों के दुबले-पतले, नंगे पैर बच्चों को तब पढ़ाने का काम किया, जब वे खेतों/बागानों में काम नहीं करते होते थे। ये प्रवासी मज़दूर और उनके बच्चे अक्सर मैले-कुचैले शिविरों में रहते, जहाँ न बिजली थी, न ही नल का पानी। उनके कार्यस्थल में न तो शौचालय थे न पीने का साफ़ पानी।

इन मज़दूरों की ख़ातिर डोलोरस ने पढ़ाने का काम छोड़ा और कम्युनिटी सर्विस ऑर्गेनाइज़ेशन (सामुदायिक सेवा संगठन, सीएसओ) से जुड़ीं। सीएसओ की शुरुआत लॉस एन्जलीस के बारिओ (हिस्पानी भाषी मुहल्ला) में बसे ग़रीब मज़दूरों के लिए की गई थी ताकि उनका जीवन सुधारा जा सके, उन्हें मत देने के लिए पंजीकृत करवाया जा सके, और खेत-मज़दूरों के लिए बेहतर कानून लाए जा सकें। 1951 में एक ऐसा कानून बनाया गया था जिससे खेत/बागान मालिक मैक्सिको के मज़दूरों को रख सकते थे, और उन्हें कम पैसे दे सकते थे। तीन घंटों के कठिन हाड़-तोड़ काम के बाद पूरा परिवार केवल बीस सेंट कमा पाता था। कठिन परिस्थितियों में फंसे लोगों को ठगना आसान जो होता है।

डोलोरस हुएर्ता और सीएसओ के विलक्षण सक्रियकर्मी सीज़र शावेज़ ने नैशनल फार्म वर्कर्स एसोसिएशन की स्थापना की। बाद में 1962 में यह संस्था युनाइटेड फार्म वर्कर्स के नाम से जानी गई। उनका मिशनः *ला कासा* यानी उद्देश्य था प्रवासी खेत-मज़दूरों को न्यायोचित व्यवहार दिलवाना।

इसे हासिल करने के लिए क्या करना पड़ा? सालों तक ग़रीब खेत-मज़दूरों को संगठित करना, धरने देना, हड़ताल करना, और खेत/बागान मालिकों के साथ मोल-तोल करना। उन्होंने गोरे और हिस्पानी छात्रों, नारीवादियों, राजनीतिज्ञों, धार्मिक सक्रियकर्मियों को इस मुद्दे से जोड़ा, ताकि वे भी अपनी आवाज़ उठाएं। अपने ग्यारह बच्चों को पालने-पोसने के अलावा डोलोरस हुएर्ता ने बड़े बहिष्कारों का आयोजन किया। उदाहरण के बतौर, अगर उपभोक्ता अंगूर न ख़रीदें, तो अंगूर उत्पादक देर-सबेर मज़दूरों से मोल-तोल करने पर बाध्य होंगे। उनके *ला कासा* के लिए उन्हें मारा-पीटा गया। बाइस बार गिरफ्तार किया गया। *ला कासा* के लिए सीज़र शावेज़ ने कई सप्ताहों की भूख हड़ताल की। ''एक इन्सान होने का मतलब है,'' सीज़र ने कहा, ''दूसरों के लिए पीड़ा झेलना।'' यह सब, और भी बहुत कुछ करने के बाद जा कर कैलिफोर्निया के गवर्नर ने 1975 में, उस पहले कानून पर हस्ताक्षर किए, जो खेत-मज़दूरों के संगठित होने का अधिकार की, बेहतर भुगतान और कार्यस्थितियों की, और चिकित्सा योजना जैसे लाभों को सुरक्षित करता था।

डोलोरस हुएर्ता महिला अधिकारों और ग़रीब मज़दूरों के बेहतर जीवन का संघर्ष जारी रखे हुए हैं। ''मैंने सोचा कि मैं खेत-मज़दूरों को संगठित कर ज़्यादा कर सकूंगी, बनिस्बत उनके भूखे बच्चों को पढ़ा कर।''

डोरिस हैडक

24 जनवरी 1910
लैकोनिया, न्यू हैम्पशायर
9 मार्च 2010
डबलिन, न्यू हैम्पशायर

"मैं अपने अधिकांश वयस्क जीवन में सुधार के संघर्ष से जुड़ी रही, पर मैंने सबसे अच्छे संघर्ष को सबसे आखिर के लिए बचाया - इस देश में लोकतंत्र को स्थापित करने का संघर्ष।"

संयुक्त राज्य अमरीका कोई राजतंत्र नहीं हैः यहाँ कोई राजा-रानी नहीं हैं। यह तानाशाही भी नहीं है, जिसमें एक ताकतवर शख्स सबको बताए कि उन्हें क्या करना है। यह कुलीनतंत्र भी नहीं है, जिसमें देश का शासन मुट्ठी भर ताकतवर लोग चलाते हों। इस देश के केन्द्र में जो विचार है वह यह है कि सरकार की ताकत लोगों में निहित है। जब लोग अपने मत देकर प्रतिनिधियों को चुनते हैं, तो "वी द पीपल ऑफ युनाइटेड स्टेटस्" देश के शासन में भागीदारी करते हैं।

इस विचार ने न्यू हैम्पशर की एक सेवा निवृत्त सचिव को नव वर्ष के दिन प्रशान्त महासागर के तट में बसे घर से निकल कर सैर करने को प्रेरित किया। जब तक उन्होंने अपनी सैर पूरी की डोरिस हैडक उर्फ़ "दादी डी." के बारे में, उनके हाथ में पकड़े उनके पीले झंडे और उस पर लिखे शब्दों के बारे में पूरे देश को पता चल गया थाः नैशनल कैम्पन फाइनेन्स रिफॉर्म (राष्ट्रीय चुनाव अभियान वित्तीय सुधार)। हर चुनाव के दौरान उम्मीदवारों के प्रचार अभियानों में पैसा खर्च किया जाता है।

रेडियो व टीवी में प्रसारित किए गए विज्ञापन आदि देने के लिए अधिकतर उम्मीदवार कुछ विशेष लक्ष्यों वाली कम्पनियों, समूहों से, और धनवान लोगों से लाखों-करोडों डॉलर लेते हैं, जिसके बदले में पैसा देने वाले उम्मीद करते हैं (और अधिकतर पाते भी हैं) कि उन्हें कानूनों में खास रियायतें दी जाएं। जीतने के लिए राजनीतिज्ञों को आवश्यक धन इकट्ठा करने में समय लगाना पड़ता है। मतलब यह कि जिन लोगों के विचार अच्छे हों पर पैसे न हों, वे चुने ही नहीं जाते। यानी लोकतंत्र को ख़रीदा और बेचा जा सकता है। कुछ लोग मानते हैं कि अपने विचारों को लोगों तक पहुँचाने के लिए वे जितना चाहे खर्चा कर सकते हैं। "अगर पैसा ही वाचा (स्पीच) है," डोरिस ने कहा, "तो जिनके पास पैसा अधिक है उनके पास वाचा भी अधिक है ... यह हमें बराबर का नागरिक नहीं रहने देता।" अर्थात् जब तक जिस तरह से चुनाव लड़े जाते हैं, उससे जुड़े कानून नहीं बदलते, राष्ट्र का विचार ही निरर्थक हो जाता है।

डोरिस हैडक, जो पाँच फीट लम्बी पर-दादी थीं नागरिकता के विचार से अपरिचित नहीं थीं। उन्होंने 1930 के दशक में नारीवादी एकल नाटक किए थे। 1960 में वे अपने पति ओर पाँच अन्य लोगों के साथ अलास्का गईं, ताकि हाइड्रोजन बम के परीक्षण के ख़िलाफ़ प्रदर्शन कर सकें। जब उनके पति और उनकी करीबी मित्र दोनों की ही मृत्यु हो गई, डोरिस ने स्वशासन के अमरीकी आदर्श के लिए एक महान काम करने की ठानीः "क्योंकि यह हमारा सपना और हमारा इतिहास है।" उन्होंने बड़ी कम्पनियों और निगमों द्वारा देश को बेच खाने का विरोध किया। उन्होंने लोगों को प्रोत्साहित किया कि वे सरकार बनें, उसके ख़रीददार नहीं।

"दादी डी." का पीला झण्डा उनके पीछे तब लहराता, जब वे रेगिस्तानों से गुज़रतीं, स्की पहन बर्फीले तूफ़ानों से निकलतीं और विधानसभाओं की सीढ़ियों पर खड़े हो भाषण देतीं। वे हर दिन 10 मील चलीं और कुल 3,200 मील पार कर वॉशिंगटन डी.सी. पहुँचीं। इस यात्रा के दौरान हाई स्कूलों के वाद्यवृन्दों ने उनके स्वागत में संगीत बजाया, कई शहरों के मेयरों ने उन्हें अपने शहर की कुंजी दी, और लोगों ने बढ़ावा देते नारा लगाया, "बढ़ो दादी, आगे बढ़ो!" 29 फरवरी 2000 को 2,000 से भी अधिक नागरिकों के साथ, जो आख़िरी मील उनके साथ चले थे, वे देश के कैपिटल भवन पहुँचीं। संगमरमर की सीढ़ियों पर खड़े हो, नब्बे वर्षीय डोरिस हैडक बोलीं, "हम यहाँ हैं सेनेटरों, आपके दरवाज़े की सीढ़ियों पर। हम लोग (वी द पीपल) ... आपने यह सोचने की हिमाकत कैसे की कि हम यहाँ इन सीढ़ियों तक नहीं आएंगे और उन लोगों के नाम पर आपके भ्रष्टाचार की निन्दा नहीं करेंगे, जिन्होंने इस देश की रक्षा और सुधार के लिए अपनी जानें दी हैं।"

उनका लम्बा सफ़र तय हुआ। उसके बारे में एक अद्भुत किताब भी लिखी गई। पर संघर्ष अभी जारी है। 21 अप्रेल 2000 को डोरिस और उनके साथियों को गैर-कानूनी रूप से एकत्रित होने के जुर्म में तब गिरफ्तार किया गया, जब वे कैपिटल भवन के गुम्बद के नीचे मुक्ति घोषणा पत्र को पढ़ कर सुना रही थीं। यह लिखे जाने तक भी चयनित प्रतिनिधि अभियान सुधार कानून पर बहस ही कर रहे हैं।

इस दुनिया को बदलने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

1. समस्या क्या है? अनेकों समस्याएं हैं। बीमारिया, हिंसा, पर्यावरण का विनाश, अन्याय, कोई भूखा है, कोई निरक्षर है। तय करें कि आपके दिल को क्या छूता है, क्या आपको नाराज़ करता है? आपको जगाता है, आपका द्वार खटखटाता है?

2. अपनी समस्या का अध्ययन करें। हर बड़ी समस्या से जुड़ा कोई संगठन होता है। उसकी वेब साइट होती है, उस पर किताबें होती हैं। अगर समस्या आस-पास की है, तो अख़बारों में उस पर क्या लिखा गया है? उन लोगों को तलाशें जो आपके सवालों का जवाब दे सकते हैं। अपने क़रीबी पुस्तकालय और/या स्थानीय सरकार से सूचना पाने की कोशिश करें।

3. जो गडबड़ है उसे ठीक कैसे किया जा सकता है? क्या लोगों को इसकी जानकारी देनी चाहिए? क्या इसके लिए धन एकत्रित करने की ज़रूरत है? क्या कानून को बदलने की ज़रूरत है? क्या स्वयंसेवकों की ज़रूरत है?

चैरिल हार्नेस

एएसएल पुस्तक सूची के अनुसार चैरिल हार्नेस "इतिहास को वास्तविक व्यक्तित्व वाले असली लोगों के रूप में प्रस्तुत करती हैं, न कि शुष्क, धूल जमी पाठ्यपुस्तकों के तथ्यों के रूप में।" उन्होंने कई प्रशंसित सचित्र ऐतिहासिक पुस्तकों की रचना की है। जिसमें *घोस्टस् ऑफ द सिविल वॉर, रिमैम्बर द लेड़ीज़* तथा *थ्री यंग पिलग्रिम्स्* शामिल हैं। वे अपना दिन शोध करते, लिखते, चित्र आंकते, ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा करते और सचित्र किताबों पर बात करते बिताती हैं। उन्होंने बैटसी-टेसी सोसायटी के झांकियों पर सवारी की है, और उन्हें विभिन्न युगों की पोशाकें पहनना पसन्द है। वे स्कूलों में अपनी प्रस्तुतियों के दौरान माउथऑर्गन बजाती हैं। वे इन्डिपेन्डैन्स, मिसूरी में अपने स्कॉटी और दो बिल्लियों के साथ रहती हैं।